CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

★ श्रीहरिः ★

हर्र ! हर्र !! हर्र !!!

हरीतकी रसायन

(उदर तथा समस्त रोगों की एकमात्र ओषधि)

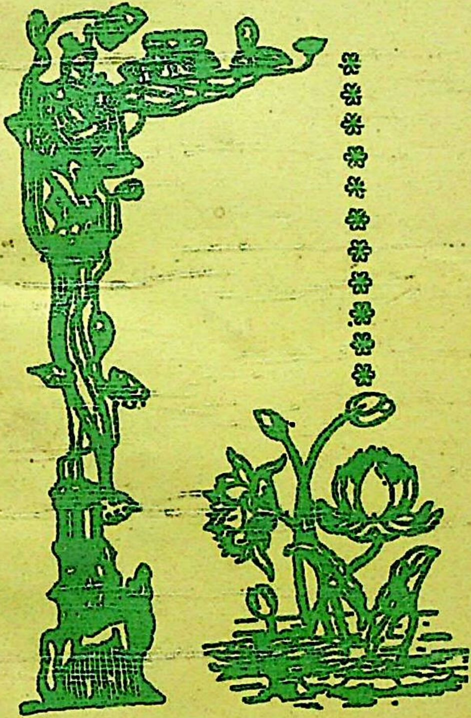

लेखक—

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

★ श्रीहरिः ★

हर्रे ! हर्रे !! हर्रे !!!

हरीतकी रसायन

(उदर तथा समस्त रोगों की एकमात्र ओषधि)

लेखक—
श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

प्रकाशक—
संकीर्तन भवन, प्रतिष्ठानपुर
(झूसी) प्रयाग

द्वितीय संस्करण
१००० प्रति

अगस्त १९९७
श्रावण, संवत् २०५४

मूल्य
१२ रुपया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

● प्रकाशक :
संकीर्तन भवन
प्रतिष्ठानपुर (झूसी)
प्रयाग

प्रथम संस्करण संवत् २०४२	२०००
द्वितीय संस्करण संवत् २०५४	१०००
	३००० प्रति

● मुद्रक—
श्रीमती कविता त्रिपाठी
साकेत मुद्रण केन्द्र
१६५/१० आजाद नगर, साउथ मल्[illegible]का,
इलाहाबाद □ दूरभाष : ६१२[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय सूची

विषय		पृष्ठाङ्क
	भूमिका	१
१.	श्री धन्वन्तरि तथा हरीतकी का अभिनन्दन	१६
२.	हरीतकी (हरड़) की उत्पत्ति और उसके नाम	२२
३.	हरीतकी के भेद और उनके गुण	२८
४.	हरीतकी के कुछ प्रयोग	३७
५.	हरीतकी के कुछ अन्य प्रयोग (२)	४६
६.	हरीतकी रसायन कल्प	५२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीतकी रसायन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

हरीतकीं पञ्चरसामुष्णामलवणां शिवाम्।
दोषानुलोमिनीं लघ्वीं विद्याद्दीपनपाचनीम्॥
आयुष्यां पौष्टिकीं धन्यां वयसःस्थापनीं पराम्।
सर्वरोगप्रशमनीं बुद्धीन्द्रियबलप्रदाम्॥ ★

(चरक चि० स्था० अ० १।२७।२८ श्लो०)

छप्पय

नित प्रति छै रस खाउ तिक्त, कटु, अम्ल, मधुर रस।
लवणहु और कषाय भये छै शास्त्र कहें अस॥
हर्र माहिँ हैं पाँच लवण रस जामें नाहीं।
शिवा पौष्टिकी धन्य अधिक गुण जाके माहीं॥
वयसूवर्धिनी लोमिनी, करन बुद्धि बल बर्धिनी।
हरड़ गुननिकी खानि है, सब रोगनिकी प्रशमनी॥

पूर्व जन्म के किये हुये पाप ही इस जन्म में रोग बनकर प्राणियों को प्रतिपल पीड़ा प्रदान करते रहते हैं। + प्रारब्ध

★ हरड़ पाँच रसों वाली है, लवण को छोड़कर। यह उष्ण है, कल्याणकारी है दोषों को अनुलोमन करने वाली है अर्थात् अन्न को पकाकर मलों को भेदकर पाक को जो नीचे ले जाय। लघु, दीपन, पाचन, आयु के लिये हितकर, पुष्टिकारक, धन्य, उत्कृष्ट, वयस्थापक, बल बुद्धि इन्द्रियवर्धक तथा समस्त रोगों को शान्त करने वाली है।

+ पूर्वजन्म कृतं पापं व्याधिरूपेण वाधते।
तच्छान्तिरोषधैर्दानै जप होम सुरार्चनैः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मों का फल तो भोगने से ही क्षय होता है। जीवन्मुक्त पुरुषों को भी प्रारब्ध कर्म भोगने ही पड़ते हैं। किन्तु प्रायश्चित कर लेने पर कुछ शान्ति अवश्य होती है। ऐसा न हो तो वैद्यक शास्त्र ज्योतिष शास्त्र व्यर्थ बन जायें। इसीलिये रोगों की शान्ति के लिये शास्त्रकारों ने पाँच उपाय बताये हैं। १– पहिला उपाय तो यह है कि आयुर्वेद के मर्मज्ञ वैद्य से विधिवत् शास्त्रीय औषधियों का सेवन करे। २–दूसरा उपाय है यथाशक्ति यथा सामर्थ्य अन्नादि का कुछ न कुछ दान करे। ३–तीसरा उपाय है शास्त्रीय मंत्रों का जप करे। स्वयं जप करने की सामर्थ्य न हो, तो विद्वानों द्वारा मंत्र जाप करावे। नित्य अग्नि में हवन करे, अथवा करावे तथा देवताओं का विधिवत पूजन करे या करावे। इन प्रायश्चित कर्मों ने रोग सर्वथा नाश तो नहीं होते, कुछ शान्ति अवश्य प्राप्त होती है।

पाप ही रोगों का रूप धारण करके कष्ट देते हैं। जैसे किसी ने सर्प मार दिया, तो वही पाप गले में कंठमाला बनकर बदला लेता है। किसी ने ब्राह्मण की हत्या कर दी तो वही हत्या राजयक्ष्मा (टी० बी०) बनकर उसे पीड़ा देती रहती है। किसी द्विजाति के व्यक्ति को सुरापन का व्यसन हो गया तो उसके दाँत काले होकर पीड़ा देगें। किसी ने द्रव्यादि की चोरी की, तो उसके नख काले हो जायेंगे उनसे पीव बहता रहेगा। किसी ने अपने से बड़े की या परनारी का संगम किया, तो उसको गरमी सुजाक तथा अन्य इन्द्रिय सम्बन्धी रोग हो जायँगे। जो ब्राह्मणों का या गुरुजनों का तिरस्कार करते हैं अथवा अन्य पाप करते हैं उन्हें कुष्ठ रोग हो जाता है, इसी प्रकार गुरुज़नों का अपकार तथा शापादि अन्य कारणों से अर्श (बवासीर) रोग हो जाता है। अर्श रोग अत्यन्त कष्ट कारक होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है (अरिवत् शृणातीति=अर्शः) जो शत्रु की भाँति कष्ट दे। अर्श दो प्रकार का होता है। एक शुष्क अर्श दूसरा स्रावी-रक्तस्रावी। शुष्क अर्श के मस्से बाहर दिखाई देते हैं और वे प्रायः गुदा की पहिली अवली में हुआ करते हैं रक्तस्रावी अर्श के मस्से दिखायी नहीं देते, वे भीतर दूसरी या तीसरी अवली में होते हैं। रक्तस्राव होने से ही पता चलता है कि इसमें अर्श है। शास्त्रकारों ने १—वातार्श, २—पित्तार्श, ३—कफार्श, ४—त्रिदोषार्श, ५—रक्तार्श और ६—सहजार्श इस प्रकार अर्श के ६ भेद बताये हैं। सहजार्श पैतृक रोग है। वंश परम्परा का रोग है। पिता पितामह, माता मातामही इनको अर्श हो, तो उनके सन्तानों को भी जन्म के साथ ही अर्श होता है। तीसरी अवली कुछ कम चौड़ी होती है, मल निकलने में कठिनाई होती है। बाल्यावस्था और युवावस्था में तो धातुओं की वृद्धि के कारण कुछ विशिष्ट कष्ट नहीं होता। किन्तु ५०/६० कं. आयु के पश्चात् वह परम कष्टप्रद होता है कभी-कभी मल शुद्ध हो जाय पेट साफ हो जाय तो आराम रहता है। नहीं तो मल बँधा हुआ शुद्ध नहीं होता-पेट गड़बड़ ही रहता है।

मैंने बालकपन से ही सुन रखा था, ब्रह्मचारी को कभी कोई रोग नहीं होता। ब्रह्मचर्य्य का यही अर्थ मैंने समझ रखा था—स्त्री-प्रसंग से सदा बचा रहे। इसका मैं कठोरता से पालन करता। चढ़ती अवस्था में विष्ठम्भ (कब्जी) की कभी परवाह ही नहीं की अधिक श्रम या यात्रा करने से अग्नि भी तीव्र रही। भूख भी लगती थी। हरिद्वार कनखल में मुक्तिपीठ—एकान्त में नहर किनारे गायत्री का पुरश्चरण किया। उस समय एक ही समय स्वयं पाक करके भोजन करने का नियम था। दूसरे समय भूख न लगे इसके लिये परामठे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूरमा ऐसे गरिष्ठ भोजन करते। भूख न रहने पर भी ठूँस-ठूँसकर गरिष्ठ भोजन कर लेते-इसलिये कि अब तो आठ प्रहर चौसठ घड़ी के पश्चात् भोजन मिलेगा। इससे वर्ष डेढ़ वर्ष के पश्चात ऐसी संग्रहणी हुई कि मृत्यु समीप ही दिखायी देने लगी। सम्पूर्ण शरीर फूल गया। अन्न की तो बात ही क्या पानी भी नहीं पचने लगा। वर्षों भाँति-भाँति की चिकित्सा के पश्चात संग्रहणी कुछ अच्छी हुई। इधर-उधर यात्रा करके यहाँ झूसी आ गया। यहाँ जब हंसतीर्थ के वट के नीचे एकान्त में अनुष्ठान करने लगा, तब उदर म असह्य अत्यन्त तीव्र पीड़ा होने लगी। उन दिनों अंगरेजी राज्य था। जनपद के प्रधान चिकित्सक (सिविल सर्जन) अंगरेज ही हुआ करते थे। वे मुझे देखने आये। उन्होंने आन्त्रवृण (अपेंडी साइड) बताई और कहा—इसका एकमात्र उपाय शस्त्रचिकित्सा (ऑपरेशन) ही है। अत: पीड़ा सर्वथा मिट जाने पर भी देहली के शस्त्रक्रिया चिकित्सक श्री नीलाम्बर जोशीजी से शल्यकर्म करवाया। वृण तो मिला नहीं उन्होंने कहा—पककर फूट गया है।

अब मुझे चेत हुआ। मैंने सोचा—मैं इतने संयम नियम से रहता हूँ, मुझे ऐसे भारी रोग क्यों होते हैं। पहिले मैं समझता था आयुर्वेद के ग्रन्थों में सोंठ, मिरच, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आँवला ये औषधियाँ ही लिखी होती होंगी। जब मैंने आयुर्वेद के ग्रन्थों को मँगाकर पढ़ा तो मेरी आँखें खुल गयी। ओहो! यह तो शास्त्र है—शास्त्र उसे कहते हैं, जो हमें परम पुरुषार्थ मुक्ति का मार्ग दिखा दे। मुक्ति का उपाय बता दे। जैसे न्याय शास्त्र कहता है परमाणुओं के ज्ञान से मुक्ति होती है। सांख्य शास्त्र कहता संसार के पदार्थों की संख्या का प्रकृति पुरुष का-ज्ञान होने से मुक्ति होती है-मीमांसक कहते हैं-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्म से मुक्ति होती है, धर्म शास्त्र कहते हैं धर्म से मुक्ति होती है वेदान्त शास्त्र कहता है ब्रह्म के ज्ञान से। योग दर्शनकार कहते हैं समाधि से चित्त की बिखरी वृत्तियों के रोकने से मुक्ति होती है। इसी प्रकार आयुर्वेद शास्त्र कहता है। शरीर के रोग रहित-आरोग्य-होने से ही मुक्ति होती है। ×

मुझे जो बार-बार संग्रहणी, अतिसार तथा विष्ठम्भ होते हैं इसका कारण सहज अर्श ही था। आयुर्वेद के अध्ययन से शरीर का रोगों का परिचय हुआ। जिसके पास शरीर है उसे शरीर के अङ्गों का उसकी प्रक्रिया का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। जैसे किसी के पास मोटर है और उसे उसके कल पूर्जों का ज्ञान नही, तो तनिक-सी भी त्रुटि प्रतीत हो, तो उसे मोटर चिकित्सक के यहाँ मोटर चिकित्सालय (गैरेज) में जाना पड़ता है। किन्तु जो मोटर के एक-एक कल पुर्जो को खोलकर देख ले। यह समझ लें कौन-सा पुरजा घिसा है, कौन-सा टूटा है। कहाँ पर मैल जमा है, कहाँ तेल अटकता है, कौन-सा तार टूटा है और फिर उन कल पुर्जों को यथास्थान लगा दे, तो उसे बार-बार मोटर चिकित्सालय (गैरेज) न जाना पड़ेगा। हाँ कोई बहुत ही बड़ी दुर्घटना घटित हो जाय तो उसकी बात दूसरी है। इसी प्रकार जिसे आयुर्वेद का साधारण ज्ञान हो; उसे बार-बार वैद्य-चिकित्सकों के पास जाने की आवश्यकता न पड़े। इसलिये आयुर्वेद के जितने भी उपलब्ध ग्रन्थ मिले लगभग ४०० के मैंने सबके सब मँगाये। उन्हें पढ़कर मेरी इच्छा हुई मैं भागवती कथा के सदृश आयुर्वेद के प्रत्येक विषय पर छोटे-छोटे बहुत से ग्रन्थ लिखूँ। फिर सोचा रोगों के चिन्तन से भगवत् चिन्तन में बाधा

× धर्मार्थ काम मोक्षणामारोग्यं मूल साधनम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़ेगी। लोगों को कुछ लाभ अवश्य होगा। किन्तु छपाई आदि का झंझट आजकल सब की प्रवृत्ति अशुद्ध एलोपैथिक चिकित्सा में हो गयी है। वे वैद्यों से बढ़कर डाक्टरों को अधिक हितकर समझते हैं। वैद्य भी अपने को डाक्टर कहलाने में गौरवान्वित अनुभव करते हैं। अत्यन्त व्ययसाध्य ऐलोपैथिक चिकित्सा की ही मान्यता हमारे राज्यों के शासकों ने दे रखी है। उसी पर अरबों-खरबों रुपये व्यय करते हैं। आयुर्वेद चिकित्सा को कोई पूछता नहीं। लोगों को भुलावा देने को आयुर्वेद की कुछ छोटी-छोटी दुकानें बना रखी हैं। उनके अधसिखिया वैद्य ऐलोपैथिक प्रधान चिकित्सक (सिविलसर्जन) के अधीन रहते हैं। वे औषधि स्वयं बना नहीं सकते, ऊपर से जो औषधि स्वीकृत होती है उनकी माँग (टेण्डर) का विज्ञापन होता है औषधि बनाने वाले दुकानदार अपनी माँगी हुई औषधियों के दाम भेजते हैं। जो सबसे कम मूल्य बतावे उन्हीं की औषधि क्रय करके आयुर्वेदीय दुकानों में रखी जाती हैं। जैसे च्यवनप्रास है। किसी ने ६० रुपया सेर किसी ने ५० रुपया सेर किसी ने २० रुपया सेर की माँग की तो जो सबसे स्वल्प-मूल्य वाला होगा उसी से क्रय किया जायगा चाहे सूखे आँवलों को पीस कर बना दे अथवा आँवले के स्थान में गाजर सकरकन्द का हलुआ बनाकर दे दे। अधिकारियों की मुट्ठी गरम कर दें कौन देखता है। जैसे सर्व साधन समपन्न करोड़ों रुपयों की लागत से ऐलोपैथिक चिकित्सालय तथा विश्वविद्यालय प्रान्तों में अनेकों हैं वैसा सर्व साधन सम्पन्न आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय भारतवर्ष में एक भी नहीं है। यदि एक भी सर्व साधन सम्पन्न विश्वविद्यालय आयुर्वेद का हो और उसमें आयुर्वेद की औषधियों पर अनुसंधान हो, तो कितने आतुरों का उपकार हो। कितनी कम मूल्य पर औषधियाँ प्राप्त हों। अब जो भी अनुसंधान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं, उन औषधियों के नाम बदल कर ऐलोपैथिक औषधियों में सम्मिलित कर ली जाती हैं। इससे आयुर्वेद का नाम ही मिटाने का प्रयत्न हो रहा है। यह देश का दुर्भाग्य है।

हमें औषधियों के विषय में कुछ कहना नहीं। किसी भी वस्तु से कैसे भी औषधि बनाओ वह कुछ-न-कुछ गुण अवगुण करेगी ही, क्योंकि हमारे यहाँ कहा है—संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो औषधि न हो (नास्तिवस्तुमनौषधम्) × प्रधान वस्तु निदान है। ऐलोपैथिक वाले प्रत्येक रोग के कीटाणु मानते हैं, उसे दूरवीक्षण यन्त्र से दिखाते हैं उनकी खेती करते हैं। यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रमयुक्त है रोगों के कीटाणु नहीं होते। रोग बात, पित्त, कफ इन तीनों से होते हैं। ऐलोपैथिक वाले व्याधि वाले मृतक पुरुषों की चीड़-फाड़ करके अङ्गों का रोगों का विश्लेषण करते हैं, यह सर्वथा भूल है। स्वस्थ पुरुष के शरीर से ही अङ्गों का रोगों का विश्लेषण करना चाहिये। किन्तु जो भ्रामक परम्परा चल पडी, शासकों ने-संरकारों ने-जिसे मान्यता प्रदान कर दी उनके दोषों को फिर कौन देखता है?

पहिले गांधीजी कहते थे घासलेट-डालडा विष है, जो इसे बनावे उसे फाँसी देनी चाहिये। डाक्टरों की एक समिति भी नियुक्त हुई। उन्होंने चूहों पर उसका परीक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला कि डालडा के नित्य प्रयोग से तीसरी पीढ़ी अंधी हो जायगी। कांग्रेस कार्यकारिणी के १६ सदस्यों में से १५ की यह सम्मति थी कि डालडा में रंग मिला देना चाहिये।

× अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्तिवस्तु मनोषधम्।
अयोग्यपुरुषों नास्ति योजकस्तत्रदुर्लभः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत दिनों तक रंग की खोज होती रही। मिठाइयों में मिलाने का तो रंग मिल गया किन्तु डालडा के लिये रंग नहीं मिला। एक दिन डालडा वालों ने न जाने पं० जवाहर लाल नेहरू के ऊपर क्या जादू कर दिया। नेहरूजी ने घोषणा कर दी–"डालडा सेहत के लिये बहुत मुफीद है।" बस, गांधीजी भी चुप हो गये। डालडा में न रंग मिला न उसके बनाने वालों को फाँसी हुई, धड़ाधड़ चल रहा है। अब तो शुद्ध डालडा भी नहीं मिलता। उसमें विकृत किसी भी काम में न आने वाली चर्बी मिलायी जाती है। सरकारें जो कह दें वह अशुद्ध बात भी शुद्ध हो जाती है। अरे, मैं तो विषयान्तर कर बैठा। अपनी बात बता रहा था। हाँ तो मैंने बहुत ग्रन्थ लिखने का विचार तो छोड़ दिया, जिससे मुझे स्वयं लाभ हुआ उस पर कभी-कभी लिखने की इच्छा होती है। जब मैं बहुत मोटा हो गया था। तो अपनी चिकित्सा करके साम्य हुआ तो मैंने "मोटापन कम करने के उपाय" पुस्तक लिखी। जिसे वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन पटना ने प्रकाशित किया। विल्व के सेवन से मुझे लाभ हुआ तो मैंने "विल्वफल अमृतफल" नामक छोटी-सी पुस्तक लिखी, जो संकीर्तन भवन झूँसी (प्रयाग) से ही प्रकाशित हुई। हरड़ के सेवन से जो मुझे लाभ हुआ उस पर यह हर्र ! हर्र !! हर्र !!! 'हरितकी रसायन' पुस्तक लिखी है। आगे किस-किस पर लिखी जायगी इसे भगवान् जाने।

अब इस पुस्तक के सम्बन्ध में भी कुछ सुन समझ लीजिये। हम जो खाते-पीते हैं, उसके सार भाग से रस बनता है, रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से हड्डियाँ, हड्डियों से मज्जा और मज्जा से शुक्र या वीर्य बनता है। वीर्य सबसे अन्तिम सातवीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धातु है। इन सात धातुओं के सात काम हैं। रस का काम है प्रीणन कर--अर्थात् तृप्ति करना, रक्त का काम है जीवन की वृद्धि। जीवन रक्त' मल और वीर्य में ही है। इन तीनों में से एक का भी पूर्ण क्षय हो जाय तो प्राणी मर जायगा। मांस का काम है लेपन करना (मांस शोणित लेपनम्) मेद का कार्य है स्नेह अर्थात् चिकनापन करना। अस्थि-हड्डियों का काम है शरीर के बोझ को धारण करना। हड्डियाँ न हों तो मनुष्य खड़ा भी नहीं हो सकता। मज्जा का कार्य पूरण करना। मज्जा ही सम्पूर्ण शरीर को पूरण करता है। शुक्र या वीर्य का कार्य है, गर्भोत्पादन करना। शुक्र माता के उदर में जाकर रज से मिश्रित होकर शिशु की उत्पत्ति करता है।

इस शरीर में बारह मल हैं। १. वसा, २. शुक्र, ३. रक्त, ४. मज्जा, ५. मूत्र, ६. विष्ठा, ७. कान का मल, ८. नाक का मल, ९. श्लेष्म, १०, अश्रु, ११. दूषिका आँख का मल और १२. श्वेद पसीना। ये शरीर के मल कहे गये हैं। हम जो खाते-पीते हैं उससे धातुएँ भी बनती हैं और मल भी बनते रहते हैं। जैसे हम तेल बनाते हैं तो तिलों से तेल भी निकलता है साथ ही उसमें मल-खली-भी निकल आती है। यदि जितना शरीर को आवश्यक है उतना ही मल बने, धातुयें बनें, तो शरीर निरोग रहता है। विषम धातु मलों के बनने से ही रोग होते हैं। जैसे श्लेष्म-कफ-शरीर को कोमल स्निग्ध बनाने योग्य ही बने तो स्वास्थकर है। अधिक कफ बनने लगे तो फिर वह मांस मेद बनकर शरीर को रोगी बना देगा। बढ़ा हुआ श्लेष्म बालों में चला जाय तो असमय में बालों को श्वेत कर देगा। दाँतों में चला जाय तो दन्त रोग उत्पन्न करके दाँतों को गिरा देगा। नाक में चला जाय तो (जुकाम) कर देगा। मुख में भर जाय तो उपजिह्वा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुजिह्वा मुख के मस्से आदि उत्पन्न कर देगा। आँतों में भर जाय तो अतिसार संग्रहणी तथा मन्दाग्नि कर देगा। गुदा में आ जाय तो अर्श आदि रोगों को उत्पन्न कर देगा।

यदि आहार-विहार नियमित और सन्तुलित-शुद्ध हो तो रोग कभी हों ही नहीं। किन्तु ऐसा होना सर्वसाधारण व्यक्तियों के लिये असम्भव है क्योंकि सबको आयुर्वेद का ज्ञान नहीं। सब लोग नित्य तोलकर खाते नहीं। सब जितेन्द्रिय नहीं, सबकी जिह्वा वश में नहीं, अतः रोग प्रायः सभी को होते हैं—इसीलिये कहावत है।

देह धरे को धर्म है जाते बचै न कोई।
मौति बुढ़ापो आपदा सब काहू को होय।
ज्ञानी काटै ज्ञानतें अज्ञानी काटे रोय।।

जब तक शरीर स्वस्थ रहता है, तब तक खाने की सभी वस्तुएँ स्वादिष्ट लगती हैं। भूख कसकर लगती है। निद्रा भरपूर गहरी आती है। मन में उत्साह रहता है, कूदकर चलते हैं, स्त्री-प्रसंग परम सुखकर प्रतीत होता है। किन्तु जब शरीर मलावृत हो जाता है, तब कितने भी सुन्दर भोज्य पदार्थ क्यों न हों उनमें स्वाद नहीं आता। जब स्वाभाविक स्वाद नहीं आता तब कृत्रिम स्वाद के लिये तीक्ष्ण मिरचा, चटनी, चूर्ण, मसाले इन वस्तुओं का आश्रय लेना पड़ता है जल को मधुर रस वाला कहा है, किन्तु हमें चीनी, शक्कर, बूरा आदि ही तीक्ष्ण मधुर रस वाले मीठे लगते हैं। पित्त का प्रकोप होने पर मिश्री भी मीठी नहीं लगती। हमे १. खट्टा, २. मीठा, ३. चरपरा, ४. कड़वा, ५. नमकीन और ६. कषाय इन छै रसों को नित्य खाना चाहिये। हरड़ में नमक रस को छोड़कर पाँचों रस हैं इसीलिये यह त्रिदोष नाशक है। आप हरड़ को भली-भाँति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चबाइये। इससे कंठ का मल भीतर चला जायगा। कंठ कुछ काल को विशुद्ध बन जायगा। अब ऊपर से पानी पीजिये। आपको जल मीठा लगेगा। जल का यथार्थ स्वाद हरड़ खाने के पश्चात् मिलेगा।

पहिले वैद्य मलों को पचाने के लिये ३०-३०, ४०-४० दिन के उपवास कराया करते थे। चिरकाल के उपवासों के पश्चात् मूँग की दाल का पानी देते थे। उसमें कितना स्वाद आता था उसे उपवास करने वाले के अतिरिक्त कोई बता नहीं सकता।

अधिक श्रम करने पर खुलकर भूख लगने पर अन्त में कितना स्वाद आता है, इसे श्रम करने वाले ही जानते हैं। एक बार हमने नेपाल के मुक्तिनाथ की पैदल यात्रा की। बड़ी ही कठिन यात्रा थी। हमने अपनी "मुक्तिनाथ दर्शन" नामक पुस्तक में उस यात्रा का विस्तृत वर्णन किया है। वहाँ सभी को इतनी भूख लगती थी, जितनी किसी को जीवन में न लगी हो। सेर-सेर भर अन्न खा लेने पर भी रात्रि में भूख से व्याकुल हो जाते थे। वहाँ किसी भी मूल्य पर छटाँक भर भी अन्न नहीं मिलता था (अन्नक्षये वर्धति जाठराग्निः) तब हम सदावर्त के अन्न को लेकर पेट भरते थे। लगभग ४० आदमी हमारे साथ थे। किस पर मोटी रोटी चली जाती तो दूसरे क्रोध करके कहते—"उन्हें मोटी-मोटी रोटी देते हैं, हमें पतली-पतली।" पहाड़ों पर चढ़ते थे १०-१०, १५-१५ मील नित्य चलते थे। भूख की कुछ पूछिये नहीं।

एक दिन हमारे बोझ वाले कुली बहुत पीछे रह गये। हम निश्चित स्थान पर पहुँच गये। दोपहर में भी विशेष कुछ भोजन नहीं मिला। अब रात्रि में इतनी भूख लगी कि रहा ही न जाय। मैंने उर्मिला से कहा—लाली ! हम पर तो भूख के मारे रहा नहीं जाता कुछ उपाय करो। उसने सबसे पूछा, किसी पर कुछ भी न निकला, एक की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झोली में १ आलू २ परवल मिले। उन्हें ही सेर डेढ़ सेर जल में नमकर डालकर ओटाया। आप सच मानिये उस नमकीन जल में जैसा स्वाद आया वैसा कभी नहीं आया। अब तक वह भूलता नहीं। तभी यह कथा सत्य प्रतीत हुई कि "भूख में किबाड़ भी पापड़ का स्वाद देती हैं। सो जब शरीर स्वस्थ रहता है तभी समस्त इन्द्रियों का रस मिलता है।

अंग्रेजी औषधियों में भी हरड़ के सत्त का प्रयोग होता है, उससे कई औषधियाँ बनायी जाती है। जैसे हिमालया ड्रग कम्पनी ने एक गैसेक्स (Gasex) गैस को हरने वाली औषधि बनाई है। इसमें हरड़ का सत्त ही होता होगा। ऐसी ही और भी कई औषधियाँ बनायी जाती हैं, किन्तु वे तत्काल भले ही लाभप्रद हों, उनका परिणाम अच्छा नहीं होता। हरड़ को तो समग्र ही खाना चाहिये। क्योंकि समग्र में ही सब गुण हैं और वह किसी भी प्रकार की हानि या प्रतिक्रिया नहीं करती। हरड़ की त्वचा कड़वी होती है, उसके बीच का गूदा खट्टा और कषाय होता है, उसकी अस्थि गुठली चरपरी होती है। उसके बीच में मधुरता होती है। हरड़ के मज्जा के विषय में बताया है कि वह आँखों के लिये हितकर है और बात पित्त को हरने वाला है। ★

पाँच रस वाली होने से यह त्रिदोष नाशक है, इसमें जो अम्ल रस है, इससे वात को नाश करती है मीठा तित्त चरपरा होने से पित्तनाशक है और कषाय और रूक्षता होने से कफ को नाश करती है। × इस प्रकार हरड़ को समग्र ही खाने से लाभ है।

★ पथ्यामज्जातुचाक्षुष्यो वातपित्तहरो गुरुः। (राजबल्लभे)

× अम्लभावाज्जयेद् वातं पित्तं मधुरतिक्ततः।
कफं रूक्ष कषायत्वात् त्रिदोषघ्नीततोऽभया॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारा शरीर जन्म से ही रोगी था। सहज अर्श होने से संग्रहणी अतिसार आदि का भी प्रकोप रहता था। क्योंकि अर्श अतिसार और संग्रहणी प्रायः अन्योन्याश्रित हैं। ये गुदा के ही रोग हैं। ये अग्नि के मन्द हो जाने से मन्दाग्नि से होते हैं, अग्नि प्रदीप्त हो जाने से चले जाते है।× अग्नि के बढ़ाने का सरल सुगम सर्वोपयोगी निर्दोष यही उपाय है कि निरन्तर अन्य औषधियों के साथ या केवल हरड़ को गोमूत्र में उबाल कर, एरंडी के तेल में भूनकर, तनिक नमक मिलाकर, अपनी शक्ति के अनुसार एक-दो, तीन-चार हरड़े नित्य खाय।

हमने "कायाकल्प की कुछ रसायनें" नामक एक पुस्तक लिखी है। उसमें हमने ३२ रसायने लिखी हैं एक-एक रसायन के कई-कई प्रयोग है। इस प्रकार उसमें कई सौ प्रयोग हैं। उसे लिखे तो कई वर्ष हो गये। अभी वह छपी नहीं। कुछ वस्तुओं का मैं स्वतः ही अपने शरीर पर प्रयोग कर रहा हूँ उसकी माँग भी बहुत आ रही है, परन्तु मुझे अभी सन्तोष नहीं हो रहा है। सन्तोष होने पर उसे प्रकाशित किया जायगा। उसमें से "हरीत की रसायन" वाला एक अध्याय मैं इस छोटी-सी पुस्तिका के अन्त में उद्धृत किये देता हूं। कुछ बातें उस अध्याय की इसमें बार-बार कई स्थानों पर आ गयी हैं। उन्हें पाठक पुनरुक्ति दोष न मानें। क्योंकि ऐसे विषय को बार-बार कहने से उस विषय की पुष्टि होती है। भूमिका कुछ बड़ी हो गई। लिखने मैं बैठता हूँ, तो मस्तिष्क में अनेक भाव आ जाते हैं, चित्त कहता है इसे भी कह दूँ, इस विषय को भी बता दूँ। भूमिका बड़ी तो और हो जाती। कहने को विषय तो और भी रह गये हैं,

× अर्शाऽतिसार ग्रहणी विकाराः प्राणेय चान्योन्यनिदान भूता।
शान्तेऽनले ते प्रक्भवन्ति रोगाः दीप्तेऽनजले ते सहसा व्रजन्ति॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु इस छोटी-सी पुस्तिका में इतना ही बहुत है, पाठकों से क्षमा चाहता हूँ विदा लेता हूँ, ' फ़िर कभी संयोग होगा तो लिखता ही रहूँगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है, जगदाधार ने मुझे लिखवाने के लिये ही भेजा है। लेखनी से बहुत पिंड छुड़ाना चाहता हूँ, किन्तु यह रांड मेरा पिंड छोड़ती ही नहीं। हाथ में जब आ जाती है तो पृथ्वी पाताल के कुलावे एक कर देती है। कब छुड़ाओगे नाथ ! इस लोह की लेखनी के चक्कर से। शरीर तो छूटना ही है, छूटकर शरीर यहीं रह जाना है। न जाने यह शरीर कितना घृत पान कर गया, कितने तेलों को सोख गया, कितने अन्न, पानी, फल-फूल, दूध, दही, मठा को चट कर गया। फिर भी स्वस्थं नही हुआ। मेरे बालकपन के खेलने के सभी साथी चल बसे। साथ पढ़ने वालों में से एक भी नहीं बचा। १०-५ बार जेल गया। जेल के साथियों में से भी स्यात् एक भी नहीं बचा। सब चले गये। मैं ही एक लोह की लेखनी लिये सफेद कागदों को काले करने को बचा हूँ। भगवान् जो करता हैं करता हूँ। कब तक करावेंगे, कुछ पता नहीं। पाठक ऐसा आशीर्वाद दें मेरी भगवान् श्यामसुन्दर के चरणों में अविरल अहैतुकी भक्ति हो।

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

छप्पय

(१)

कब तक मेरे श्याम ! स्याह कागद करबाओ।
कब तक राधारमन ! विविध नगरनि भटकाओ॥
कब तक घूमत फिरूँ प्रतिष्ठा पाप बटोरूँ।
कब तक इत उत भ्रमत इष्टतें मुखकूँ मोरूँ॥
शास्त्रनिमें सब कुछ लिख्यो, नई बात हौ का लिखूँ।
करूँ वासना पूर्ण निज, वाहवाही को विष चखूँ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२)

हरड़ अमृतकी पुत्रि अमृत पी सुर हरषावें।
सत्सङ्गति नहिँ करें विषय भोगनि फँसि जावें॥
ह्वै जावे यदि अमर हियेमें भक्ति न होवै।
स्वस्थ बनै का लाभ व्यरथ ही जीवन खोवै॥
हरि हरीतकी एक सँग, चिन्तन अरु भक्षन करे।
तो फिर प्रभुके पग पकरि, भवसागर तुरतहिँ तरे॥

संकीर्तन भवन प्रतिष्ठानपुर
झूसी (प्रयाग)
चैत्र-शुक्ला सप्तमी
सं० २०४२ विक्रमी

प्रभु कृपा का इच्छुक—
प्रभुदत्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री धन्वन्तरि तथा हरीतकी का अभिनन्दन

[१]

धन्वन्तरिश्च भगवान् स्वयमेव कीर्ति-
नाम्ना नृणां पुरुरुजां रुज आशु हन्ति।
यज्ञे च भागममृतायुरवावरुन्ध
आयुश्च वेदमनुशास्त्यवतीर्य लोके॥ ★

(श्री भा० २। ७। २१)

स वै भगवतः साक्षात् विष्णोरंशांशसंभवः।
धन्वन्तरिरिति ख्यात आयुर्वेददृगिज्यभाक्॥ ×

(श्री० भागवते ८। ८। ३४, ३५

छप्पय

धन्वन्तरि भगवान् चरन कमलनि सिर नाऊँ।
नाम लेत सब रोग नसें तिनिके गुन गाऊँ॥
उदधि मथन जब भयो अमृत घट लेके निकसे।
रोग शोक सुख हरन भूमि पै रविसम बिकसे॥
प्रकट अमृत घट लै भयै, अमृत बिन्दुतें हरड़ माँ।
उभय चरन बन्दन करूँ, हरीतकी गुन भनहुँ माँ॥

★ भगवान् धन्वन्तरि जो स्वनाम धन्य हैं, जो उनका नाम ही ले ले हैं, ऐसे बड़े-बड़े रोगी अपने रोगों से तत्काल छूट जाते हैं। उन्होंने देवता को अमृत पिलाकर अमर बना दिया हैं। दैत्यो द्वारा उनके हरण किये हुए य भाग को उन्हें पुनः दिला दिया। भगवान् धन्वन्तरिजी ने ही अवतार ग्रहण कर संसार में आयुर्वेद को प्रवर्तित किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवता तथा असुरों ने मिलकर; मन्दराचल को रई बनाकर; वासुकी को रससी बनाकर; क्षीरसागर को मथा। इससे देनों ही वन्दनीय हैं। मथने पर १४ रत्न निकले, वे रत्न भी नमस्कार्र हैं। अन्त में अमृत का घट लिये हुए भगवान् धन्वन्तरिजी भी प्रकट हुए ।× उनके पादपद्मों में पुनः-पुनः प्रणाम है। किन्तु वे साक्षात् विष्णु न थे। विष्णु के अंशांश थे इससे कुछ निर्बल सिद्ध हुए। असुर उनसे अमृत का कलश लेकर भग गये। देवता खिन्न हो गये। इस समुद्र मन्थन के समय भगवान् के कितने अवतार एक साथ ही हो गये। कच्छप रुप से भगवान् मन्दराचल को अपनी पीठ पर धारण किये रहे। जिससे मन्दराचल नीचे न धँस जाय। एक अवतार से मन्दराचल के ऊपर भी बैठ गये। एक अजित अवतार से देवताओं के साथ मन्थन कार्य भी करते रहे। मथते-मथते एक परम पुरुष हाथ में अमृत का कलश लिये हुए निकले। उनकी शोभा अवर्णनीय थीं। उनके शरीर का वर्ण अलसी के सुन्दर सुमन के सद्दश था। वे दीर्घवाहु थे उनका कण्ठ शङ्ख के सद्दश उतार चढ़ाव का था। उनके नेत्र कमल के समान सुन्दर रक्त वर्ण के थे। गले में मणिमुक्ताओं की मनोहर माला पहिने हुए थे। समस्त अद्‌भुत अलौकिक अङ्ग आभूषणों से आलोकित हो रहे थे। कानों में कमनीय कनक कुण्डल धारण किये हुए थे। तरुण तन पर रेशमी पीताम्बर फहरा रहा था। उनके कमनीय कर कङ्कनों से शोभायमान थे। कारे-कारे कुटिल घुँघराले बाल मस्तक पर शोभायमान थे। उनके ऊपर

× वे ही आयुवेद के प्रवर्तक तथा यज्ञ भोक्ता धन्वन्तरि के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। वे साक्षात् भगवान् विष्णु के अंशांश अवतार ही थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मणिमय मुकुट शोभायमान था। कर कमलों में अमृत कलश लिये हुए वे ज्यों ही बाहर निकले, त्यों ही दुर्दमनीय दैत्य उनके हाथों में से कलश को छीन कर यह गये वह गये। चम्पत हो गये। देवताओं की आकृति विकृत हो गयी तब अजितावतार बोले—तुम चिन्ता मत करो मेरा अभी एक अवतार अवशिष्ट है। अब तक तो मैं मोहन था अब मोहिनी बनकर दैत्यों से अमृत छीन कर तुम्हें अमृत पिलाकर अमर बना दूँगा। सो भगवान् ने ऐसा ही किया। घूँघट की ओट में से जो सैंनों की चोट लगाई तो दैत्य लोट-पोट हो गये। अमृत का कलश मोहिनी को सौंप दिया। उनको उल्लू बनाकर देवताओं को अमृत पिलाकर मोहिनी अन्तर्धान हो गयी। बोल दे मोहिनी देवी की जय। धन्वन्तरि जी से मोहिनी जी बलवती सिद्ध हुई।

हाँ तो रोगों के हरने में तो भगवान् धन्वन्तरि ही कुशल हैं। अतः उनके पादपद्मों में फिर से पुनः-पुनः प्रणाम है।

बचे हुए अमृत को देवगण स्वर्ग में ले गये इन्द्र एक दिन अमृत पी रहे थे। त्रिलोकी की कुछ चिन्ता कर रहे होंगे। सो उनके पान पात्र से अमृत की कुछ बूँदे पृथ्वी पर पड़ गयीं। उन्हीं अमृत बिन्दुओं से हरीतकी उत्पन्न हो गयी। वह भी धन्वन्तरि के सदृश ही रोगों को नाश करने में शक्तिशालिनी हुई। फिर भी धन्वन्तरि -धन्वन्तरि ही हैं। हरीतकी उनसे पीछे हुई तो कुछ तो उसमें न्यूनता होनी ही चाहिये। इस सम्बन्ध की एक कथा है। उसे भी सुन लीजिये।

एक बार कुछ विपक्षियों ने झूठे ही यह समाचार फैला दिया कि धन्वन्तरिजी की मृत्यु हो गयी। इससे प्रजा के लोग बड़े चिन्तित हुए। वे सोचने लगे धन्वन्तरिजी यदि नहीं रहेंगे तो कैसे काम चलेगा। रोगियों के वे ही तो एकमात्र अवलम्ब थे। अब रोगों का नाश कौन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करेगा ?" इसी चिन्ता में मग्न होकर लोग हाय-हाय कर रहे थे। लोगों को दुखी देखकर हरीतकी बोली—'तुम लोग चिन्ता क्यों करते हो' धन्वन्तरि नहीं रहे तो न सही मैं तो हूँ। मैं सभी रोगों को नाश करने में समर्थ हूँ।'

यह बात किसी ने जाकर धन्वन्तरिजी से कह दी। उसने कहा—महाराज! हरीतकी को तो बड़ा गर्व है, वह कहती है—धन्वन्तरि नहीं रहे तो न सही। मैं तो हूँ ही। मैं सभी रोगों को नाश करने में समर्थ हूँ, सभी रोगों में मेरा प्रयोग होता है।

यह सुनकर धन्वन्तरिजी हँस पड़े और हँसते हुए बोले—अच्छा, हरीतकी से जाकर यह पूछो कि जो कच्चा ज्वर है ज्वर का आरम्भ ही है, उस कच्चे ज्वर में तुम्हारा क्या उपयोग है ?"

उस व्यक्ति ने हरीतकी से जाकर पूछा—आप कहती हो मैं सब रोगों में उपयोगी हूँ, तो बताइये अभी ज्वर आरम्भ ही हुआ है। ज्वर की पूर्व दशा है उस कच्चे ज्वर में आपका क्या उपयोग है ?

यह सुनते ही हरीतकी शीघ्रता से बोल उठी—निश्चय ही अभी धन्वन्तरिजी की मृत्यु नहीं हुई, इस बात को धन्वन्तरि के अतिरिक्त दूसरा कोई जानता ही नहीं। ज्वर के आदि में तो लङ्घन ही प्रशस्त है। ज्वर के मध्य में पाचन और ज्वर के अन्त में रेचन देना चाहिये। मेरा उपयोग ज्वर के अन्त में ही है। ज्वर के आदि में मेरा कोई उपयोग नहीं।" इस प्रकार हरीतकी ने धन्वन्तरि से हार मान ली। कैसी भी हो हरीतकी धन्वन्तरि से टक्कर लेने वाली तो है ही। धन्वन्तरिजी तो धन्वन्तरि ही ठहरे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान् धन्वन्तरि गरुड़जी के शिष्य हैं तथा भगवान् शङ्करजी के उपशिष्य है। भगवान् धन्वन्तरि का एक अवतार काशी में काशीराज महाराज दीर्घतमा के पुत्र रूप में हुआ। भगवान् नारायण ने वरदान दिया था कि तुम काशीराज के गोत्र में उत्पन्न होकर आठ प्रकार के आयुर्वेद का प्रवर्तन करोगे।

काशिराज के पुत्र हुआ दीर्घतमा, दीर्घतमा के पुत्र हुए धन्वन्तरि, धन्वन्तरि के पुत्र हुए केतुमान, केतुमान के पुत्र हुए भीमरथ और भीमरथ के पुत्र हुए दिवोदास। ये दिवोदास ही धन्वन्तरि के अवतार मानें जाते हैं। भाव प्रकाश में इस सम्बन्ध की कथा इस प्रकार है।

एक समय देवराज इन्द्र ने पृथ्वी के प्राणियों को रोगों से ग्रस्त देखा। तब उन्हें उन पर बड़ी दया आई। उन्होंने धन्वन्तरिजी से कहा—देखो जी धन्वन्तरि! तुम लोगों के ऊपर दया करो। पृथ्वी के प्राणी रोगों से पीड़ित हैं, जीवों के उपकारार्थ भगवान् अनेक अवतार धारण करते हैं। इसलिये आप पृथ्वी पर जाकर काशी में राजा बनो।" इन्द्रजी की आज्ञा पाकर उनसे समस्त आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करके वे काशी में 'दिवोदास' नाम से नृपति बनकर उत्पन्न हुए। वे ही धन्वन्तरि नाम से काशिराज हुए। उन्होंने ही लोक के हित के लिये आयुर्वेद संहिता का निर्माण किया।

इस प्रकार भगवान् धन्वन्तरि ने लोक के हित के निमित्त अनेक प्रकार से आयुर्वेद का प्रचार किया। उन्हीं भगवान् धन्वन्तरि के ग्रन्थों से मैं अमृता नाम वाली हरीतकी की कुछ महिमा का वर्णन करूँगा। इसलिये भगवान् धन्वन्तरिजी को प्रणाम है तथा भगवती हरीतकी को भी पुनः-पुनः प्रणाम है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छप्पय

नाम ग्रहन जिन करें रोग सबरे नसि जावें।
रक्षा करें कुपथ्य रोगते रहित बनावें॥
धरि धन्वन्तरि रूप लोक हितमें नित तत्पर।
नासें सब गद देव यज्ञभुक्नामभिषक वर॥
ओषधि माहिँ हरीतकी, कही गुनवती रहित भय।
ता महिमा बरनन करूँ, कृपा करें प्रभु दयामय॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री हरिः ॥

हर्र ! हर्र !! हर्र !!!

हरीतकी रसायन

हरीतकी (हरड़) की उत्पत्ति और उसके नाम

[२]

स्वर्गस्थामराध्यक्षस्य अमृतं पिवतस्तत: ।
पतिता बिन्दवो भूमौ तेभ्यो जाता हरीतकी ॥ ★

(हारीत संहिता पं०क०अ० १ श्लो० ५)

छप्पय

अमराधिप श्रीइन्द्र स्वरगमे बैठे सुखतें।
करें अमृतको पान हरषयुत परम प्रेमतें॥
पीवत पीवत अमृत गिरी कछू बूँद भूमि पै।
कृपा करी करुनेश दुखिंत भूके जीवनि पै॥
ताहीतें पैदा करी, प्रभु हरीतकी रसायन।
ओषधि सबई रोगकी, माता सम हित परायन॥

★ स्वर्ग में निवास करने वाले देवताओं के अधिपति श्रीइन्द्रजी अमृत का पान कर रहे थे, उसी समय अमृत की कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिर पड़ीं। उन गिरी हुई अमृत बिन्दुओं से हरीतकी (हरड़) की उत्पत्ति हुई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसार की उत्पत्ति द्वन्द से है। जीवन-मरण, सुख-दुःख, हानि-लाभ तथा विष और अमृत। इनमें से बुद्धिमान अवगुनों को त्यागकर गुणों को ग्रहण कर लेते हैं। शिवजी ने विष पान किया था। उस विष के कुछ कण भूमि पर गिर पड़े। उन्हीं से सर्प, बिच्छू आदि विषैले जीव तथा मिट्टा संखिया आदि विषैली औाधियाँ उत्पन्न हो गयीं। इसी प्रकार देवताओं के अमृत पान करते समय अमृत की कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिर पड़ी उन्हीं से तुलसी, हरीतकी तथा आमलकी आदि अमृतोपम औषधियों उत्पन्न हो गयीं। किन्तु दुर्भाग्य से मनुष्य अमृत सदृश शुभ औषधियों का परित्याग करके सुरा सदृश विषवत् औषधियों का सेवन करते हैं।

संसार में प्राणियों का हित करने वाली माता के सदृश दूसरी कोई वस्तु नहीं है। ''माता समाना न शरीर पोषणम्'' माता के स्तनों का दुग्ध बच्चों के लिये अमृत के सदृश है। जिन बच्चों को माता का दुग्ध उपलब्ध नहीं होता, उनमें स्नेह, अनुराग, प्रेम तथा अपनत्व की कमी रह जाती है। माता बार-बार जो बच्चे का आलिंगन करती है, उसके मुख का स्नेह से चुम्बन करती है, अपने हाथों से उसके शरीर में तैल मर्दन करती है उसे न्हिलाती, धुलाती तथा खिलाती है, इससे बालक के स्नेह में वृद्धि होती है। जननी स्वर्ग से भी अधिक सुखदायिनी होती है। माता मारती भी है, तो बच्चा उसी से आकर लिपटता है।

दुर्भाग्य से जिसे माता का स्नेह प्राप्त नहीं हुआ है, उसकी माता 'हरीतकी' हरड़ है। हरड़ में शरीर के पोषण के सभी गुण उपलब्ध है। आयुर्वेद के कथनानुसार नित्य पेट में कड़वे, मीठे, खट्टे, चरपरे, कषाय और लवण ये ६ रस जाने ही चाहिये। किसी पदार्थ में एक रस होता है, किसी में दो या तीन किन्तु हरड़ में नमक को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोड़कर पाँच रस हैं, अतः नमक मिलाकर हरड़ के सेवन से षट्रस भोजन का लाभ होता है। इसीलिये कहा गया है—जिसके घर में माता न हो उसकी माता हरड़ है। माता तो कभी-कभी कुपित होकर मार भी देती है; कुपित भी हो जाती है, किन्तु हरड़ किसी भी दशा में किसी भी रोग में हानि नहीं करती।×

देवराज इन्द्र अमृत पान कर रहे थे, उसमें से कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिर पड़ी इसी से हरीतकी उत्पन्न हो गयी। यह सूर्य की किरणों के सदृश दोषों को नाश करने वाली है, कालिन्दी के सदृश बल और प्रमोद को देने वाली है। भगवती गौरी के सदृश शंकरजी को प्रिय है। अग्नि के सदृश जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाली है। पृथ्वी की भाँति सभी रसों से युक्त है।+

स्कन्ध पुराण में तो आया है समुद्र मन्थन के समय समुद्र से जो रत्न उत्पन्न हुए उनमें हरीतकी रत्न भी है।★

× माता यस्य गृहे नास्ति तस्य माता हरीतकी।
कदाचित् कुप्यते माता नैव कुप्यति हरीतकी॥

\+ पीयूषं पिवतस्त्रिपिष्टपपतेर्ये बिन्दवो निर्गता-
तेभ्योऽभूदभया दिवाकरकरश्रेणीय दोषापहा।
कालिन्दीव बलप्रमोदजननी गौरीव शूलिप्रिया।
वह्निद्योतकरी हुताहुतिरिव क्षौणीय नानारसा॥
(राजबल्लभे)

★ ममन्थु क्षीर जलधि ब्रह्माद्याः ससुराऽसुराः।
ऐरावतः कल्पतरुश्चन्द्रमा कमला तथा।
उच्चैश्रवा कौस्तुभश्च तथा धन्वन्तरिर्हरिः।
हरीतक्यादयश्चापि दिव्याओषधयस्तथा।
अजायन्त द्विजश्रेष्ठा लोकश्रेयो विधायकाः।
(स्कन्द पु० वै० ख० ८ अ)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् अमृत के सदृश हरीतकी भी क्षीरसागर से ही उत्पन्न हुई हैं। वास्तव में हरीतकी के गुण अमृत के ही सदृश हैं। इसीलिये इसके संस्कृत ग्रन्थों में ३९ नाम हैं। और ये नाम यथानाम तथा गुणों वाले हैं। जैसे–

१– हरीतकी-यह शिवजी के भवन में हिमालय में उत्पन्न हुई तथा स्वभाव से रंग से हरी भी है। समस्त रोगों को हरने वाली है, इसीलिये इसका नाम हरीतकी है। ×

२– अभया–जो सब प्रकार से प्राणियों को भय रहित कर दे।

३– अव्यथा–जो सभी प्रकार की व्यथा का हरण करे।

४– पथ्या–जो सब प्रकार से पथ्य हो। कभी अपथ्य न हो।

५– वयस्था–जो आयु को स्थिर रखे।

६– पूतना–जो परम पवित्र हो।

७– अमृता–जो अमृत के सदृश गुणवाली हो।

८– हैमवती–शिवजी के सदृश शीघ्र प्रसन्न होने वाली।

९– चेतकी–जो ज्ञानेन्द्रियों को उन्मीलन करे।

१०– श्रेयसी–जो सदा कल्याण ही करती रहे।

११– शिवा–कल्याण करने वाली–(अमरकोषे)

१२– सुधा–अमृत सदृश गुणवाली।

१३– कन्या–विशुद्धा जिसकी पुरुष कामना करते हैं।

१४– कायस्था–जो काया में स्थित होकर मंगल करे।

१५– रसायनफला–ऐसा फल जो रसों के समूह को एक साथ

× हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः।
हरते सर्व्व रोगाश्च तेन नाम्ना हरीतकी॥
(राजबल्लभे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समस्त शरीर में पहुँचाकर बल-वीर्य की वृद्धि करे। (शब्द रत्नावली)।

१६– विजया–सबरोगों पर विजय प्राप्त करने वाली।
१७– जया–सदा जय प्राप्त करने वाली।
१८– चेतनकी–जो चेतना को जागृत करने वाली हो।
१९– रोहिणी–आरोहण करने वाली।
२०– प्रपथ्या–जो सबसे अधिक पथ्य वाली औषधि हो।
२१– जीवप्रिया–जो समस्त जीवों को प्रिय करने वाली हो।
२२– जीवनिका–जो जीवन दान देने वाली हो।
२३– भिषग्वरा–जो सब औषधियों में श्रेष्ठ हो।
२४– जीवन्ती–जो जीवन का आधार हो।
२५– प्राणदा–जो प्राणों को देने वाली हो।
२६– जीव्या–जो जीवनरूपा ही हो।
२७– देवी–जो दिव्य गुणवाली हो।
२८– दिव्या–जो ओषधियों में परम दिव्य हो।
२९– बल्या–बल प्रदान करने वाली।
३०– प्रमथा–रोगों को भली प्रकार मथन करने वाली।
३१– शाका–जो अत्यन्त ही स्वादिष्ट खाने योग्य हो।
३२– रुद्रप्रिया–जो शंकरजी की अत्यन्त प्यारी हो।
३३– वनतिक्ता–वन में उत्पन्न होने वाली और तिक्त हो।
३४– शक्रस्टष्टा–जिसे इन्द्र ने अपने अमृत बिन्दुओं से पैदा किया हो।
३५– सुधोद्भवा–जो अमृत से उत्पन्न हुई हो।
३६– चेतनकी–जो चेतना को जागृत करती हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७– भिषकप्रिया–जो वैद्यों को अत्यन्त प्यारी हो।

३८– हिमजा–जो हिमालय में उत्पन्न हुई हो।

३९– गिरिजा–जो पहाड़ों पर पैदा होती हो।

इस प्रकार हरड़ के अनेक नाम हैं। इन नामों से ही हरड़ की महत्ता प्रकट होती है। अब आगे हम हरीतकी के भेदों का वर्णन करेंगे।

छप्पय

हरड़, हरीतकि, सुधा, शिवा, अभया, जीवनिका।
अमृता, पथ्या, जया, चेतना, अरु कायस्था॥
विजया, कन्या, भिषक्वरा, जीव्या जीवन्ती।
देवी, दिव्या, जीव-प्रिया, चेतकि हैमन्ती॥
जीवप्रिया अरु प्राणदा, श्रेयसि ये सब नाम है।
हरीतकी अति गुनवती, यथा नाम तस काम हैं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीतकी के भेद और उनके गुण

[३]

हरीतक्यमृतोत्पन्ना सप्तभेदैरुदीरिता।
तस्या नामानि वर्णांश्च वक्ष्याम्यथ यथाक्रमात्॥
विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताभया।
जीवन्ती चेतकी चेति नाम्ना सप्तविधा स्मृता॥★

छप्पय

पाँच रसनितें युक्त लवन रस जामें नाहीं।
रेचन कार्य प्रवीन मधुरता मंध्यहु माहीं॥
अस्थिबीज है तिक्त मांस है, अम्ल कसाये।
कड़वी जाकी त्वचा सात तिहि भेद बताये॥
अमृता अरु है पूतना, जीवन्ती अभया यथा।
कही रोहिणी चेतकी, हैं विजया सप्तम तथा॥

हम लोग हरड़ को दो प्रकार की ही जानते थे। छोटी हरड़ को हरड़ और बड़ी हरड को हरड़ा कहते हैं। परन्तु शास्त्रों में हरड़ के सात भेद बताये हैं। उन सबके गुण भी पृथक् हैं और कौन-सी हरड़ किस कार्य में प्रयुक्त करनी चाहिये यह भी बताया है। जिस

★ हरीतकी अमृत से उत्पन्न हुई है। उसके सात भेद कहे गये हैं, उसके नामों को और वरणों को यथाक्रम कहूँगा। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती तथा चेतकी इस प्रकार सात भेदों वाली हरीतकी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार की हरड़ों की महिमा बतायी है ऐसी हरड़ें अब मिलती नहीं। सुकुमारों राजकुमारों के लिये ऐसी हरड़ का वर्णन मिलता है, कि जब तक उसे मुट्ठी में दबाये रहोगे, तब तक मल का रेचन अपने आप ही होता रहेगा। ऐसी हरड़ अब कहाँ मिलती है?

हमने सुना था। कश्मीर महाराज के यहाँ हरड़ों का बगीचा था। महाराज हरड़ के पेड़ के जब नीचे जाते तभी उन्हें शौच की प्रबल इच्छा हो जाती। शास्त्रों में भी ऐसा वर्णन है। ऐसा बताया है क़ि चेतकी नामक हरड़ के वृक्ष की छाया में जो मनुष्य यहाँ तक कि पशु, पक्षी, मृगादि भी जावें, तो उन्हें तुरन्त शौच होने लगता है। पता नहीं वे वृक्ष अब कहाँ लुप्त हो गये।★ शास्त्रों में हरड़ के जो सात भेद बतायें हैं उन्हें शास्त्रानुसार हम नीचे लिखे देते हैं। इस विषय में हमारा कोई अपना निजी अनुभव नहीं है। जिन लोगों ने हरड़ पर शोध की हो उनकी खोज की हो वे विशेष बता सकते हैं।

हरड़ सात प्रकार की होती है। उनके ये नाम हैं। १—विजया, २—रोहिणी, ३—पूतना, ४—अमृता, ५—अभया, ६—जावन्ती तथा ७—चेतकी ये ही सात नाम हैं। अब इनके गुण तथा स्वरूपों के सम्बन्ध में भी सुनिये।

१—विजया—विजया नाम की हरड़ गोल लौकी के सदृश होती है। यह विन्ध्यादि देश में विशेषकर उत्पन्न होती है। वैसे सभी स्थानों में प्रति स्थान में हो जाती है। इस विजया का प्रयोग सभी रोगों में

★ चेतकी पादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः॥
(भावप्रकाशे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया जाता है। इन सात प्रकार की हरड़ों में विजया को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसका प्रयोग सुखप्रद है। और यह सुलभ भी है। इसका प्रयोग सभी व्याधियों में प्रशस्त बताया गया है। ★ जो हरड़ जल में डालने से शीघ्र ही जल में बैठ जाय उसे वैद्यों ने गुणवती माना है। और जो जल में डालने पर बार-बार नीचे बैठ जाय फिर ऊपर आ जाय फिर नीचे बैठ जाय वह अल्पगुण वाली हरड़ है।+ विजया नाम की हरड़ सभी रोगों में लाभप्रद है।

२– रोहिणी–दूसरी हरड़ का नाम रोहिणी है, यह सुन्दर वृत्तवाली होती है। यह विशेषकर सिन्ध देशों में पैदा होती है। कहीं कट जाय क्षत हो जाय, ऐसी क्षत व्याधियों में इसका विशेष प्रयोग होता है। फोड़ा आदि के ऊपर लेप करने में रोहिणी का प्रयोग प्रशस्त है। यह कपिल वर्ण की सर्वथा गोल होती है।

३– पूतना–तीसरी हरड़ का नाम पूतना है। पूतं करोतीति पूतना। यह सिन्धु देश में विशेष होती है। इसकी त्वचा स्वल्प इसकी हड्डी-बीजा-बड़ी होती है। मगध देशों में भी यह होती है। यह चार अंगुल लम्बी होती है। इसका प्रयोग लेपन कार्य में प्रशस्त बताया गया है।

४– अमृता-चौथी हरड़ का नाम है अमृता। इसमें गूदा-मांस-अधिक होता है। गुठली छोटी होती है। इसका विशेष प्रयोग विरेचन कर्म में होता है। शोधन कर्मों में यह परम प्रशस्त तथा हितकर मानी जाती है।

★ सप्तानामपि जातीनां प्रधानं विजया स्मृता।
सुखप्रयोग सुलभा सर्व्वव्याधिषु शस्यते॥

+ क्षिप्राप्सु निमज्जति या सा झं या गुणवती भिषग्बरैः।
यस्या यस्या भूयो निमज्जनं सा गुणाल्पा स्यात्।
(राजांनिघंट्ट)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५– अभया-पाँचवी हरड़ का नाम है अभया। नास्ति भयं यस्याः सा=अभया। जिससे किसी प्रकार का भय न हो उसे अभया कहते हैं। यह चम्पा आदि देशों में उत्पन्न होती है। यह पाँच शिर वाली पञ्चाशा-पञ्चशिरा मानी जाती है। विशेष कर नेत्र रोगों में प्रशस्थ कही गयी है। ×

६—जीवन्ती-छटी हरड़ का नाम जीवन्ती है। यह सुवर्ण के वर्णवाली बतायी है। यह त्रिदोष नाशक है। श्वास (दमा) कास (खाँसी) को हरने वाली है। धातुक्षय में लाभप्रद है। सौराष्ट्र देशों में विशेषकर उत्पन्न होती है। यह स्नेह पाक वाली जीर्ण रोगों को नाश करने वाली बतायी गयी है।

७—चेतकी-चेतकी नाम वाली सातवीं हरड़ है। यह सभी रोगों को नाश करने वाली बतायी गयी है। चेतयते उन्मीलयति ज्ञानेन्द्रिय बलदीनि-जो ज्ञानेन्द्रिय के बल को चैतन्य करे वही चेतकी है यह हिमालय में उत्पन्न होती है। यह त्रिशिरा होती है। तीन शिर इसके होते हैं। यह सर्वरोग विनाशिनी बतायी गयी है। यह दो प्रकार की होती है। आकार से भी और वर्ण से भी दोनों प्रकार की भिन्न-भिन्न होती हैं। ६ अंगुल वाली का नाम हिता यह शुक्ल वर्ण की है। एक अंगुल वाली शुक्ल वर्ण की शुक्ला होती है। कृष्ण वर्ण वाली हिता रेचन कार्यों के लिये सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है यहाँ तक बताया गया है कि चेतकी वृक्ष की छाया में पशु, पक्षी मृग कोई भी जब तक बैठे तब तक इसे शौच होता रहता है। फिर मनुष्यों के लिये तो कहना ही क्या है। चेतकी को मुट्ठी में बाँधकर जब तक मनुष्य बैठा रहे तब तक उसे शौच-रेचन-होता रहेगा। किसी के तो खाने से रेचन होता है, किसी के केवल गन्ध से-सूँघने से ही रेचन होता है। किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

× अंभया नेत्र रोगेषु गन्धयुक्तौ तु कालिका।

के केवल हाथ में लेने से स्पर्श से और किसी के केवल देखने से ही रेचन हो जाता है। ×

चेतकी हरीतकी ऐसा लगता है इस कलियुग में लुप्त हो गयी है। अब न उसका कहीं वृक्ष दृष्टिगोचर होता है न फल ही। यदि कहीं चेतकी का फल मिल जाय तो लोग लाखों रुपयों में लेने को उद्यत हो जायें। प्रायः बड़े लोगों को यही कष्ट होता है, उनको शौच नहीं होता। होता भी है तो खुल कर नहीं। उन्हें अनेक ओषधियाँ खानी पड़ती हैं। यदि छाया में जाने से अथवा फल को हाथ में लेने से ही शौच हो जाय तो फिर अन्य औषधियों की आवश्यकता ही क्या ? सब रोगों का मूल स्थान प्रायः आतें ही हैं। कहावत है "आँत भारी तो गात भारी" यदि शौच शुद्ध हो जाय, अपानवायु बिना शब्द किये अपने आप निसृत हो जाय, उद्गार-डकार अपने आप शुद्ध निकलने लगे। भूख अच्छी प्रकार लगने लगे। जो खायँ वह भली प्रकार पच जाय। गहरी निद्रा आने लगे। ये सब बातें आँतों की शुद्धि

× चूर्णार्थ चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत्।
चेतकी द्विविधा प्रोक्ता श्वेता कृष्णा च वर्णतः॥
षडअंगूलायता शुक्ला कृष्णा चैकांगुलायता।
काचिदास्वादमात्रेण काचिद् गन्धेन भेदयेत्॥
काचिद् स्पर्शेन दृष्टान्या चतुर्द्धाभेदयत्छिवा।
चैतकी पादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः॥
भिद्यन्ते ततक्षयादेव पशुपक्षि मृगादयः।
चेतकी तु धृता हस्ते यावत् तिष्ठति देहिनः॥
तावद्भिद्येत वेगेस्तु प्रभावान्नात्र संशयः।
नृपातिसुकुमाराणां कृशानां भेषजाद्विषाम्।
चेतकी परमाशस्ता हिता सुख विरेचनी॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से होंगी, तभी मन प्रसन्न विकार रहित हो जायगा। फिर रोग कहाँ से आवेंगे?

एक बार अकबर ने अपने दरबार में मन्त्रियों से पूछा—सबसे अधिक प्रसन्नता किस बात से होती है?

किसी ने कहा—पुत्र प्राप्ति से प्रसन्नता होती है। अकबर ने कहा—सबको नहीं होती। बहुत पुत्र होने पर दुःख होता है।"

किसी ने कहा—कामिनी काञ्चन की प्राप्ति से प्रसन्नता होती है।

बादशाह ने कहा—वह भी सब को नहीं होती। त्यागी संन्यासियों को तो उनसे दुःख ही होता है।

किसी ने दान से, किसी ने धर्म से, किसी ने स्वादिष्ट भोजन से, किसी ने विजय आदि अनेक मनोनुकूल वस्तुओं की प्राप्ति से प्रसन्नता बतायी। किन्तु बादशाह ने किसी को भी सार्वजनिक प्रसन्नता का हेतु नहीं माना। तब बीरबल से पूछा गया।

बीरबल ने कहा—श्रीमन्! जिस दिन खुल कर शौच हो जाय। आँतें शुद्ध हो जायँ, खुलकर भूख लगे, इससे बढ़कर प्रसन्नता का दूसरा कोई कारण नहीं।

बदशाह को भी अर्श का रोग था। उन्होंने हँसकर कहा—आपने ठीक कहा। यह सार्वजनिक प्रसन्नता का कारण है। ऐसा होने पर सभी को प्रसन्नता होती है।

वास्तव में हरीतकी का विधिवत् सेवन करने से आँतें शुद्ध हो जाती हैं। कारण यह है कि हरीतकी रेचक होती है। यह पञ्च रसों वाली है लवण रस को छोड़कर इसमें सभी रस हैं। यह रूक्ष है। उष्ण स्वभाव की होने से शीत प्रकृति वाले स्लेष्म-कफ-को नाश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करती है। अग्नि को दीप्त करने वाली है। पाक में स्वादु है यह रसायन है। आँखों के लिये परम हितकर है, आयु को बढ़ाने वाली है, अपानवायु को निसृत करती है। श्वास (दमा) कास (खाँसी) प्रमेह, अर्श (बवासीर) कुष्ठ (कोढ़) शोथ (सूजन) पेट में जो कीड़े पड़ जाते हैं उनके लिये, कंठ के बैठ जाने पर, गला पड़ जाने में, संग्रहणी में, शोच के रुकने में, विषमज्वर में, पेट में गोला होने में, फोड़ा, छींक, हिचकी आना, खुजली में, हृदय के रोगों में, आमाशय के रोगों में, ब्रण के स्थान में, प्यास में, कमला रोग में, शूल में, प्लीहा तथा यकृत में, अश्मरी, मूत्रकृच्छ और मूत्राघात, आदि रोगों में परम हितकर है।

यह स्वादु है। हरड़ खाकर पानी पीओ तो कितना मीठा लगता है, तिक्त भी है कषेली होने से पित्त और कफ में हितकर है। तथा कड़वी, तिक्त, कषाय तथा अम्ल होने से वात नाशक है हरड़ को मुख में डालकर दातों से चबा ले, तो जठराग्नि की वृद्धि करने वाली होती है। पीस कर गोला बनाकर गरम जल के साथ ले; तो मल का शोधन करती है। घृत में अथवा एरण्डी के तैल में भूनकर ले, तो संग्रहणी में पथ्य है। बिना जल के वैसे ही भूभर में भूँजकर खाने से त्रिदोषों को नाश करने वाली होती है। भोजन के साथ हरड़ का सेवन करे, तो वह बुद्धि, बल औंर इन्द्रियों को बढ़ाने वाली, वात, पित्त, तथा कफ को नाश करने वाली मूत्र तथा मल को निकालने वाली होती है। भोजन करने के पश्चात् मुख शुद्धि के लिये हरीतकी का ही प्रयोग करे, तो अन्नपान कृत दोष जो वात, पित्त, कफ से होते हैं, उनको नष्ट करती है। नीबू के रस में नीबू का आचार डालकर उसमें अधिक नमक डाल दें और उस रस में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेर आध सेर छोटी हरड़ डाल दें। महीना या पन्द्रह दिन में वे फूल जायँ, तो उन्हें छाया में सुखा लें। मुख शुद्धि के लिये १-२-३-४ तक नित्य ले तो अत्यन्त ही लाभप्रद है।

हरड़ को यदि नमक मिलाकर खाय तो वह कफ को नाश करती है। यदि शक्कर या पिसी हुई मिश्री मिलाकर खाय तो पित्त को नाश करती है, हरड़ के चूर्ण को गो घृत में मिलाकर खाय तो वात सम्बन्धी रोगों को नाश करती है। हरड़ को पीस कर गुड़ मिलाकर खाय तो सभी रोगों को नाश करती है। इस प्रकार अनेक वस्तुओं के साथ हरड़ अनेक रोगों को नाश करती है। प्रायः सभी रोगों में प्रशस्त है कुछ लोगों को कुछ रोगों में हरड़ निषेध है। जैसे—

जो बहुत दूर चलकर आया हो और अत्यन्त खिन्न हो उसे हरड़ नहीं देनी चाहिये। जो अत्यन्त दुर्बल हो उसके लिये भी हरड़ निषेध है। जिसकी प्रकृति अत्यन्त रूक्ष हो उसे भी हरड़ लाभप्रद नहीं है क्योंकि हरड़ स्वयं ही रूक्ष होती है। अत्यन्त कृशव्यक्ति को भी हरड़ निषेध है। जिसने कई लंघन किये हों और लंघन करते-करते कृश हो गया हो उसे भी हरड़ नहीं देनी चाहिये। जिसे अत्यन्त पित्त का प्रकोप हो उसके लिये भी हरड़ लाभ प्रद नहीं है। और गर्भवती स्त्री को भी हरड़ नहीं देनी चाहिये। तथा रक्तहीन हो गया हो उस रक्त की कमी वाले को भी हरड़ न दे। ★

इस प्रकार कुछ प्रकरणों में हरण का निषेध होने पर प्रायः

अध्वातिखिन्नो वलवर्जितश्च
रूक्षः कृशोलंङ्घन कर्षितश्च।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी
विमुक्तरक्तस्त्वभयां न खादयेत्॥

(भावप्रकाशे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी रोगों में केवल हरड़ या अन्य ओषधियों के साथ हरड़ लाभदायक ही है। अब हम आगे हरड़ के कुछ शास्त्रीय प्रयोगों का, कुछ अपने अनुभूत प्रयोगों का वर्णन करेंगे। पाठक उन्हें प्रेमपूर्वक पढ़ने की कृपा करें।

छप्पय

(१)

सात भाँतिकी हरड़ विविध रोगनिहिं नसावै।
ताहि चबाकें खाय बुद्धि बल वीर्य बढ़ावै॥
कूटि पीसिके खाय करें मलमूत्र विशोधन।
संग्रहणी में सिकी भुनी सब रोग नसावन॥
नोंन सहित कफ हरति है, पित्त हरै शक्कर सहित।
घृत सँग वात विनासिनी, गुड़ सँग सब रोगनि हरत॥

(२)

मार्ग थकित बल रहित रूक्ष कृश हरड़ न खावैं।
लङ्घनते जो कृषित हरड़ते सुख नहिँ पावैं॥
पित्त अधिक बढ़ि जाय हरड़ ताकूँ नहिँ देवै।
गरभवती जो नारि हरड़ कबहूँ नहिँ सेवै॥
कच्चे ज्वर में हरड़ नहिँ, रक्तहीनकूँ सुख नहीं।
हरड़ सदा सुख देत है, इन सबकूँ दुखकर कहीं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीतकी के कुछ प्रयोग

[४]

उन्मीलिनी बुद्धिबलेन्द्रियाणाम्
निर्म्मूलिनी पित्तकफानिलानाम्।
विस्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानाम्
हरीतकी स्यात् सह भोजनेन ॥ ★

(भावाप्रकाशे)

छप्पय

इन्द्रिय बल अरु बुद्धि बढ़ावै दोषनि नासै।
सब मल देइ निकारि हरड़ भोजन सँग खावै॥
भोजन के उपरान्त खाइ मुख शुद्ध करन हित।
अन्नपान कृत दोष वात पित्तादि हरति नित॥
लवण सहित कफकूँ हरै, वातज रोगनि घृत सहित।
शक्कर सँग पित्तज हरै, सब रोगनि गुड़ सँग हरति॥

हरड़ माता सभी रोगों में हितकर है। केवल हरड़ ही गुणकारी है। फिर अन्य ओषधियों के सहित तो वह उन सब गुणों में मिल जाती है और तत्काल फल देती है। धनिकों के लिये तो अनेकानेक

★ हरड़ यदि भोजन के साथ खायी जाय तो वह बुद्धि बल तथा इन्द्रियों को उन्मीलन करने वाली-बढ़ाने वाली-होती है तथा वात पित्त और कफ को निर्मूल करने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली तथा मूत्र विष्ठा आदि मलों को निकालने वाली होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुमूल्य औषधियाँ हैं, उनको स्वल्प मूल्य की औषधियों पर, स्वल्प दक्षिणा वाले वैद्यों पर विश्वास ही नहीं होता। अधिक-से-अधिक मूल्य वाली ओषधि हो, अधिक-से-अधिक दक्षिणा वाला नामी चिकित्सक हो, तब वे समझते हैं, हमारी समुचित चिकित्सा हुई। किन्तु निर्धनों के लिये असाहयों के लिये हरड़ से बढ़कर कोई सरल, सुगम सर्वत्रलब्ध ओषधि नहीं। वैद्यक शास्त्रों में इसके अनेक प्रयोग हैं। यहाँ पर हम कुछ थोड़े से प्रयोग लिखते हैं। ऋतुओं के अनुसार विविध वस्तुओं को मिलाकर सेवन करें। वर्धमान नियम से छोटी हरड़ों को खाय, मुख शुद्धि के स्थान पर हरड़ भक्षण करे सभी प्रकार से हरड़ सुखदायी ही है। केवल हरड़ पर ही ग्रन्थ लिखा जाय तो वह बहुत बड़ा ग्रन्थ हो जायगा। यहाँ पर हम हरड़ किन-किन रोगों पर लाभ प्रद है। इसमें से कुछ के सम्बन्ध में लिखेंगे।

१—हरड़ की गोली

जितना हरड़ का चूर्ण हो उससे दुगुनी बीज निकालकर दाख लेकर उनको खूब घोटे जब दोनों एकरस हो जायँ, तो बहेड़े के फल के समान बड़ी-बड़ी गोलियाँ बना ले। प्रातःकाल बिना कुछ खाये एक गोली नित्य खाया करे तो इसके भक्षण से शनैः-शनैः उदर के रोग, हृदय के रोग, पित्त दोष, रक्तदोष, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खांसी, कमला, अरुचि, प्रमेह, गुल्म, पीड़िका आदि रोग नाश होते हैं। केवल हरड़ को ही अण्डी के तैल में भून कर नित्य २-४-६ तक खाय तो यही बहुत गुणकारी होती है क्योंकि चरक में कहा है कि हरड़ कुष्ठ, गुल्म, उदावर्त, शोष (क्षय) पाण्डुरोग, अर्श, संग्रहणी, पुराना विषमज्वर, हृदय के रोग, शिर के रोग, अतीसार, अरोचक, खांसी, प्रमेह आनाह-मूत्रपुरीष रोधन रोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्लीहा-तिल्ली-नवीन उदर रोग, कफ प्रसेक-मुख से कफ या लार का निकलना-स्वरभेद-विवर्णता, कमला, कृमिरोग, शोथ, तमकश्वास-दमा-छर्दि-कै-क्लैव्य-नपुंसकता-अंगों का शिथिल होना, स्रोतों का रुक जाना, छाती का फुफ्फुस या कफ से लिप्त होना, स्मृति तथा बुद्धि का नाश आदि रोगों को हरीतकी जीत लेती है। ★ ऐसा लगता जैसे च्यवन ऋषि आँवलों के च्यवनप्रास से वृद्धा से युवक हो गये थे। वैसे ही अगस्त ऋषि ने हरड़ों का भक्षण करके इतनी शक्ति प्राप्त कर ली होगी कि पूरे समुद्र के जल का ही पान कर गये। आतापी को पचा गये। वातापी को भगा गये। खाते-खाते सीताजी को रुला गये, विन्ध्याचल को सुला गये अब हम भगवान अगस्त मुनि द्वारा कहे गये कुछ हरड़ के प्रयोगों का वर्णन करेंगे।

२—अगस्ति हरीतकी पाक

सौ अच्छी सुन्दर नई हरड़ें ले फिर उनहें भारङ्गी पोहकर मूल, चीता (चित्रक) पीपलामूल, गजपीपली, कचूर, शंखपुष्पी, दशमूल, चीता, खरैंहटी, जवासा और कौंच इन बारह ओषधियों के साथ १६ सेर पानी के साथ मन्द-मन्द अग्नि से भली-भाँति पकावे। जब गाढ़ा हो जाय तब हरड़ों को उसमें से निकाल ले। और उस

★ कुष्ठं गुल्ममुदावर्त शोषं पाण्ड्वामयं मदम्।
अर्शांसि ग्रहणीदोषं पुराणं विषमवरम्॥
हृद्रोगं साशिरोरोगमतीसारमरोचकम्।
कासं प्रमेहमानाहं प्लीहानमुदरं नवम्॥
कफप्रसेकं वैस्वर्यं वैवर्ण्यं कमलां कृमीन्।
श्वयथुं तमकं छर्दिं क्लैब्यमंगावसादनम्॥
स्रोतो विबन्धान् विविधान् प्रलेपं हृदयोरसोः।
स्मृतिबुद्धिप्रमोहं च जयेत् शीघ्रं हरीतकी॥
(चरकसंहितायाम्)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओषधियों के काढ़े को छान कर उसमें ५ सेर पुराना गुड़, १६ तोला शहद, १६ तोला घृत और ५०० पीसी हुई पीपली का चूर्ण मिला देवै। उस ओषधियुक्त क्वाथ में गुठली निकाली हुई हरड़ों को मिलाकर रख देवै। उन हरड़ों में से दो हरड़ नित्य शहद के साथ खाने से समस्त रोगों के लिये परम हितकर है। विशेषकर पाण्डुरोग, खांसी, हलीमक, गुदा के रोग, हृदयरोग, हिचकी, भ्रम, पीनस, प्रमेह, रक्तपित्त कुष्ठ, संग्रहणी आदि रोगों में विशेष लाभप्रद है। स्त्रियों के पुष्प को बढ़ाती है, शोजा, अरुचि, गुल्म, राजयक्ष्मा, मूत्र रोग, आनाह-मूत्रपुरीषरोधनरोग-मल का बँध जाना-गाँठें पड़ जाना-इन रोगों को नष्ट करता है। क्षीण इन्द्रिय वालों को यह हरीतकी पाक परम हितकर है, मन्दाग्नि और अरुचि रोगों को भस्म कर देता है। यह अगस्ति ऋषि द्वारा कहा हुआ हरीतकी पाक शरीर को सर्वदा सुख देने वाला है। ★

★ भार्ङ्गीपुष्करमूल चित्रककणा मूलं गजाह्वा शटी
शंखाह्वदशमूल, चित्रकवलायासात्म गुप्तास्तथा।
ऐतेषां द्विपलांशकी वरभिषक् प्रोक्ता च पञ्चाढके
पथ्यानां शतकं विपाच्य बहुधा मन्दाग्नि संततम् ॥
निर्वाप्यं पुनरेव पूत सरसं चोद्धृत्य पथ्याशतशतम्
संशुष्यामति शीतले सुभवनक्वाथः प्रशस्तः पुनः।
दत्त्वा जीर्णगुणस्य चैकतुलया कुडवञ्च क्षौद्रं घृतं
स्नेहस्यार्द्धमथाक्षकेण मगधायोज्यं शतं पञ्चकम्॥
चूर्णं तत्र निधापयेत् पुनरपिसंघट्टयेदुच्चकं
पथ्ये द्वे मधुनासहातिहितकृत सर्वाभयच्छेदनः
पाण्डुंकासहलीमकं गुदरुजो हृद्रोगहिक्काभ्रमान्।
हन्यात् पीनसमेहपित्तमसृजं कुष्ठं ग्रहण्याभयम्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३- हरीतक्यादि योग

हरड़ के चूर्ण को अथवा सोंठ के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर खाय अथवा सैंधे नमक के साथ नित्य नियम से खाय तो इससे अग्नि प्रदीप्त होती है। ×

४–अमृतहरीतकी (तक्रहरीतकी)

अच्छी सुन्दर नयी जो घुनी न हों ऐसी १०० हरड़ों को ले। उन्हें मट्ठा में भिगो दे। चौबीस घंटे भीगती रहें। फिर उन्हें अग्नि पर चढ़ाकर पकावै। जब सीज जायँ नरम हो जायँ तो किसी चाकू या सूजा से एक ओर से चीरकर चतुराई से उनकी गुठलियों को निकाल देवैं। तदनन्दर पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रककीछाल, सोंठ, काली मिरच, सांभर नमक, सुहागा, सैंधा नमक, विडनमक, सञ्चर नमक, हींग, जवाखार, जीरा और अजमोद इन पन्द्रह वस्तुओं को एक-एक तोला लेकर सब का चूर्ण बना ले। इसमें ६ मासे नि:सोथ भी मिला ले। इन चूर्ण को कपड़ छान करके इसमें चूका के रस की भावना दे लेवे। फिर इस चूर्ण को उन चिरी हुई हरड़ में भरकर डोरे से बॉधकर सुखा लेवे। इनमें से एक हरड़ का

पुष्पं चैव तनोति शोफमरुचिं गुल्मार्तिराजक्षय
मेहानाह विबन्धरोगशमनं क्षीणेन्द्रियाणां हितम्
मन्दाग्नेःप्रशमं करोति वडवातुल्योऽरुचिबंधकं
नाशं वा विद्धाति देहसुखदागस्ति प्रणीताभया॥
(हरौतकी संहिता—तृतीय स्थाने ६३ से ६६ श्लो०)

× हरीतकी तथा शुण्ठी भक्ष्यमाणा गुडेन वा।
सेन्धवेनयुता वा स्यात् सातत्येनाग्निदीपनी॥
(वृहन्निाघंटुरत्नाकरे)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नित्य सेवन करे तो अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदर के समस्त रोग, शूल, संग्रहणी अर्श-बवासीर—विड्बन्ध, अफरा, वादी तथा आमवात इन सब रोगों का नाश करती है। इसी हरीतकी का नाम अमृतहरीतकी अथवा तक्रहरीतकी है।

५—हरीतकी चूर्ण

पेट में कीढ़े पड़ गये हों तो हरड, सञ्चरनमक, हल्दी इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर ले। फिर इन्द्रायन का काढ़ा बनाकर जब चतुर्थांश जल रह जाय तब उस काढ़े की उस चूर्ण में भावना दे। यह चूर्ण पेट के कृमि समुदाय का नाश करता है। नित्य नियम से इस चूर्ण को जल के साथ भक्षण करे।

६—अमृत हरीतकी

जिनको शुष्क पाण्डुरोग हो गया हो उन्हें नित्य एक अमृत हरीतकी का सेवन करना चाहिये। उसके बनाने की विधि यह है। १४४० तोले अथात ३६० बड़ी हरड़े अच्छी नई बिना घुनी हरड़ों को ले। फिर शतावरी, भृङ्गराज (भँगरा) पुनर्नवा तथा कुरंटक (पियाबास) इन चारों को अट्ठाईस-अट्ठाईस तोले लेकर ४४८ तोले जल का काढ़ा बनावे। जल जलकर चतुर्थांश रह जाय तब उस काढ़े को उतार कर छान लेवे। उस काढ़े में १४४० तोले हरड़ों को डाल देवे उसमें १२० तोला अर्थात डेढ़ सेर गौ का दुग्ध मिलाकर उसे अग्नि पर चढ़ाकर हरड़ों को पकाये। पकते-पकते जब वे सीज जायँ भली भाँति नरम हो जायँ तब उन्हें उतार ले। जब ठण्डी हो जायँ, तो चीरकर उनकी गुठलियों को निकालकर फेंक दे। तदनन्दर २४ तोले पारे की कजली २४ तोला गन्धक इन दोनों को एक पात्र में चढ़ाकर पचन करावे। जब दोनो मिलकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सघन हो जायँ तो इनका चूर्ण कर लेवे। उस चूर्ण में २८ तोले गिलोय का सत्त्व पीसकर मिला देवे। उस चूर्ण में शहद मिलाकर उसकी ३६० गोलियाँ बना ले। प्रत्येक गुठली निकाली हुई हरड़ में एक-एक गोली भरकर सूत से लपेट देवे और उन सब हरड़ों को शहद के भरे बर्तन में डाल दे। उसमें से नित्य एक हरड़ निकालकर खाय। इसी का नाम अमृत हरीतकी है। यह निश्चय ही शुष्कपाण्डुरोग या कैसा भी पीलिया हो उसका नाश कर देवेगी।

७—गोमूत्र हरीतकी योग

अथवा अमृत हरीतकी न बना सके तो सुन्दर स्वच्छ नई हरड़ों को २१ दिन तक गोमूत्र में भिगोता रहे। नित्य नया गोमूत्र बदलता रहे। २१ दिन के पश्चात् उन्हें छाया में सुखा ले। उनमे से नित्य एक हरड़ खाया करे तो पांडुरोग का नाश हो जायगा।

८—हरीतक्यादि-अञ्जन

हरड़, वच, आँवला तथा स्वर्ण गेरू इनका नस्य बनाकर सूँघने से कमला-पांडुरोग दूर होता है।

९—हरीतक्यादि नस्य

नाँक में से रक्त निकलने पर हरड़, अनार का फूल, कलयारी इन तीनों को जल में पीसकर नस्य लेवे तो नकसीर का जाता हुआ रक्त बन्द हो जाता है।

१०—अगस्त्य हरीतकी अवलेह

अगस्त्य मुनि द्वारा कहे हुए पाक का वर्णन तो हम पीछे कर ही चुके हैं। अब हम महर्षि अगस्त्यजी के बताये हुए हरीतकी अवलेह का वर्णन करते हैं, इससे क्षय आदि सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी बड़ी-बड़ी १०० हरड़ ले। उन हरड़ों को जौ के काढ़े में डाले। काढ़ा बनाने का उपाय यह है कि एक आढ़क (अर्थात् ४ सेर) जौ लेकर उन्हें कूटकर जौकुट कर लेवे, उन्हें चौगुने अर्थात् १६ सेर जल में अग्नि पर चढ़ा दे। औटाते-औटाते जब चौथाई जल (लगभग ४ सेर) रह जाय तब उतार कर छान ले। छने हुए जल के काढ़े को तो रख ले जौओ को फेंक दे। उस जौ के जल में दशमूल की औषधियों का काढ़ा और मिलावै। दशमूल की औषधियाँ ये हैं। १. चित्रक, २. पीपरामूल ३. अपामार्ग (ओंगा) ४. कचूर, ५. कौंच के बीज, ६. शङ्खपुष्पी, (शङ्खहूली) ७. भारङ्गी, ८. गजपिप्पली, ९. बला और पोहकर मूल। इन दशों को दो-दो पल अर्थात् ८-८ तोले लेवे। इस प्रकार ये औषधियाँ ८० तोले (एक सेर) हुईं इन सब को जौकुट करके २० सेर जल में अग्नि पर चढ़ा दे। जब चौथाई जल रह जाय तब उसे छान ले। इस काढ़े को जौ वाले काढ़े में मिला दें। इस मिले हुए काढ़े में उन सौ हरड़ों को डाल दे। उन्हें अग्नि पर चढ़ा दे। जब सीज जायँ तब उनकी गुठली निकाल दे और उसमें ३२-३२ तोला तिल का तेल और घृत डाले साथ ही एक तुला ४०० तोला (५ सेर) गुड़ भी डालकर सबको मिलाकर पकाते-पकाते अवलेह बना ले। जब अवलेह तैयार हो जाय, और ठण्डा-शीतल हो जाय, तब उस शीतल अवहेल में एक-एक कुड़व (अर्थात् पाव-पाव भर) पीपल का चूर्ण और शहद उसमें मिला दे अब यह अगस्त्य हरीतकी अवलेह तैयार हो गया। इसमें से गुठली निकाली हुई दो हरड़े अवलेह के साथ नित्य खाय। पथ्य हलका भोजन भूख लगने पर करे। यह अवलेह साधारण औषधि नहीं रसायंन है। इसके सेवन से क्षय रोग, खांसी, ज्वर, श्वास (दमा)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिचकी अर्श (बवासीर) अरुचि, पीनस रोग, संग्रहणी आदि रोग दूर होते हैं। देह की सिकुड़न बली (झुर्रियाँ) तथा असमय में सफेद हुए बाल काले हो जाते हैं। ये हमने हरीत्तकी के कुछ प्रयोग यहाँ लिखे कुछ और आगे लिखेंगे।

छप्पय

हरीतकीके कछु प्रयोग हम तुम्हें बतावें।
हरड़चूर्ण सम दाख मिलावैं गोलि बनावें॥
घोटि एक रस करै बड़ी गोली नित खावै।
नित प्रति सेवन करै रोग सबरे नसि जावै॥
अमृत-अगस्ति हरीतकी, मुनि अगस्त अवलेह नित।
गुड़ हरीतकी सँग भखै, नसै रोग अति मुदित चित॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीतकी के कुछ अन्य प्रयोग (२)

[५]

पथ्या पञ्चरसायुष्या चाक्षुष्यालवणा सरा।
मेध्योष्णा दीपनीकुष्ठदोष शोथब्रणापहा ॥★

(राजबल्लभे)

छप्पय

परम पथ्य है हरड़ पाँच रस वारी प्यारी।
मिलैं नोंन षटरसी स्वास्थकूँ अति हितकारी॥
गूदा अम्ल कषाय त्वचा कटु अस्थि तिक्त है।
मध्य भाग है मधुर लवणतें हरड़ रिक्त है॥
उष्ण, दीपिनी रेचिका, आँखिनिकूँ हितकर परम।
कुष्ठ शोथ ब्रण नासिनी, वात पित्त कफ रुज हरन॥

हरीतकी के कुछ प्रयोग हमने पिछले अध्याय में कहे। यदि हरीतकी के सभी प्रयोगों को हम आयुर्वेद केग्रन्थों से छाँट-छाँटकर यहाँ लिखें तो एक बड़ा भारी पोथा बन जायगा। यह हमारा उद्देश्य भी नहीं। हमने तो हरड़ की महिमा बताने के लिये ही यह छोटी-सी पुस्तिका लिखी है। इसलिये कुछ थोड़े से प्रयोग यहाँ और लिखकर इस विषय को समाप्त करते हैं।

★ हरड़ का एक नाम पथ्या है, यह अत्यन्त पथ्य है इसमें पाँच रस है। आयु को बढ़ाने वाली है,चक्षुओं को हितकर है, केवल इसमें लवण रस नहीं। सरा है, मेध्य है, उष्ण है, दीपनी है तथा कोढ़, त्रिदोष, सूजन तथा फोड़ा, फुन्सी सभी रोगों को नाश करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११—हरीतक्यादि वटी

हरड़ में त्रिकटु (पीपल, सोंठ तथा काली मिरच) इन चारों को बराबर-बराबर ले इन्हें गुड़ में मिला ले, बहेड़े के बराबर गोलियाँ बना ले। एक-दो-तीन गोली नित्य खाय तो खांसी तो नष्ट हो ही जायेगी साथ ही यह दीपन और पाचन भी है।

१२—हरीतक्यादि चूर्ण

वृद्धावस्था में बहुमूत्र रोग हो जाता है। थोड़ी-थोड़ी देर में लघुशंका जाना पड़ता है। इसके लिए त्रिफला (हरड़, बहेड़ा और आँवला तीनों को बराबर ले) का चूर्ण करके इसमें लोहभस्म अष्टमांस मिलाकर शहद के साथ चाटे तो बहुमूत्र रोग शान्त हो जाय।

१३—हरीतकी गूगल

बहुत से लोगों को विरुद्ध आहार विहार के कारण आमाशय का आँव वायु से प्रेरित होकर कफ से मिलकर नाड़ियों में भर जाता है। इससे अंग टूटने लगते हैं। अरुचि, प्यास, आलस्य, शरीर का भारीपन, ज्वर, अपच तथा देह में शून्यता सी प्रतीत होती है। इसके लिये हरीतकी गुग्गल हितकारी है। इसे इस प्रकार बनावें।

छोटी हरड़ें, सोंठ, विधाराका चूर्ण इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर इनका चूर्ण बना ले। इस चूर्ण से दुगुना गूगल पीसकर उसमें मिला दे। फिर ऐरंड के तेल (कास्ट्रायल) में डालकर बारह घंटे उसे खरल करे। यह हरीतकी गुग्गल चूर्ण आमवात को नाश करता है। योगराज गुग्गुल भी इसमें अत्यन्त हितकारी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४–हरीतकी योग

यदि और ओषधि न बना सके तो केवल हरड़ को ही अंडी के तेल के साथ भक्षण करे। आमवात, अन्त्रवृद्धि और प्रध्रसीवात नष्ट हो जाता है।

१५–हरीतक्यादि चूर्ण

मिथ्या आहार-विहार के विभिन्न अङ्गों में वातशूल हो जाता है। उसमें बड़ी पीड़ा होती है। उसके लिये यह चूर्ण है।

इसकी विधि यह है। हरड़, अतीस, हींग, संचर नमक, वच और इन्द्रजौ। इन ६ ओषधियों को बराबर-बराबर लेकर इनका चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को गरम जल के साथ एक तोला खाय तो कैसा भी वातशूल हो नाश हो जाता है। शूल के स्थान को सेंकना, दबाना और शनैः-शनैः मर्दन करना हितकर है।

१६–हरीतक्यादि क्वाथ

प्रायः वृद्धावस्था में मिथ्या आहार-विहार से, अधिक मैथुनादि से, मल, मूत्र, वीर्य के वेगों को रोकने से मूत्रकृच्छ्र रोग होता है। बड़ी कठिनता से कष्ट के साथ मूत्र उतरता है। पथरी आदि होने से उतरता ही नहीं। उसमें हरीतक्यादि क्वाथ लाभप्रद है। उसे बनाने का उपाय यह है–

हरड़, गोखुरू, अमलतास, पाषाणभेद और धमासा (पियावास) अडूसा–इन पाँच वस्तुओं को बराबर लेकर एक सेर जल में चढ़ा दे। जब पाव भर रह जाय तब छानकर ठंडा करके शहद मिलाकर नित्य पीवे तो मूत्रकृच्छ में बहुत लाभ हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७—हरीतक्यादि उद्वर्तन

परिश्रम न करने से, चिकने, गरिष्ठ तथा कफवर्धक पदार्थों को अधिक खाने से, दिन में सोने से आँव बढ़ जाता है। वही आँव मेद का रूप धारण करके मेद को बढ़ाता है, पेट बढ़ जाता है हड्डियों में समा जाता है, स्तन बढ़ जाते हैं, शरीर थुल-थुल करने लगता है इसके लिये हरड़ को पीसकर कपड़छान करके उस चूर्ण से पूरे शरीर में मर्दन करे, फिर गरम जल से स्नान कर ले। हरड़ों को नित्य सेवन करे। जिससे पेट साफ होकर शरीर हलका हो जायगा।

१८—हरीतक्यादि क्वाथ

अग्नि मन्द हो जाने से ही समस्त रोग होते हैं, अग्नि दीप्त हो जाय तो रोग चले जाते हैं। उदर में अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं, उनकी चिकित्सा भी पृथक-पृथक है। पेट में सूजन आ जाय तो हरड़, सोंठ, देवदारु, पुनर्नवा, गिलोय इन ५ चीजों को समभाग लेकर इनका काढ़ा बनावे, उस काढ़े में गूगल और गोमूत्र डालकर पीवे, इससे शोथोदर में लाभ होता है। एक बार पञ्च कर्मो के करने में व्यतिक्रम हो जाने से मेरे उदर में बड़ा शूल हो गया। अपानवायु तथा मल का निकलना बन्द हो गया। अत्यन्त पीड़ा हो गयी। मैंने अन्न, जल सर्वथा त्याग दिया। कुछ खाने-पीने की इच्छा ही न होती थी। तब वैद्यराज पं० सुरेश दत्तजी तिवारी ने मुझे नाराचघृत दिया। उससे तुरन्त लाभ हुआ। यहाँ मैं उस नाराचघृत को भी लिखे देता हूँ। हरड़, बहेड़ा, आँवला, चित्रक, जमालगोटा, कटेरी थूहर, आक और वायविडंग, इन नौ ओषधियों को लेकर इनका काढ़ा बनावे। जब काढ़ा बन जाय तब छानकर उस काढ़े में १६ तोला गोघृत डालकर मन्द-मन्द अग्नि पर पकावे। जब काढ़ा जल जाय घृत मात्र शेष रह जाय, तो उसे किसी शीशे के पात्र में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रख ले। उसमें से ६ मासे नित्य भक्षण करे। इससे पेट की सूजन वायुगोला, अफरा, प्लीहा तथा जलोदर नाश हो, इसे ही नाराचघृत कहते हैं। ★

रोग असंख्य हैं, उनकी औषधियाँ असंख्य हैं। आचार्य असंख्य है, उनके ग्रन्थ असंख्य हैं। न कोई रोगों की गणना कर सकता है, न औषधियों की। संसार की सभी वस्तुएँ औषधियाँ हैं। संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो किसी-न-किसी रोग की औषधि न हो। (नास्ति वस्तुमनोषधम्) यहाँ मेरा उद्देश्य न तो रोगो का निदान करने का है न औषधियों का विवरण देने का है। यहाँ तो मुझे हरीतकी के गुण बताने हैं। स्यात् ही कोई आयुर्वेद ओषधि हो जिसमें हरीतकी का किसी-न-किसी प्रकार से प्रयोग न किया हो। आप और कुछ न कर सकें, केवल एक हरड़ को या तो दाँतों से चबा लें या चूर्ण करके खा लें या पीसकर शहद के साथ चाट लें। या बहेड़ा, आँवले (त्रिफला) को रात्रि में भिगोकर प्रातः छानकर पी जायँ, आँखों में डाल लें। आपको लाभ ही करेगा। उस श्लोक को पुनः लिखकर मैं इस ग्रन्थ को समाप्त करता हूँ। अपने अप्रकाशित ग्रन्थ "कायाकल्प की कुछ रसायनें" में से हरीतकी रसायन अध्याय को आगे देकर लेखनी को विराम देता हूँ। श्लोक यह है—

माता यस्यग्रहे नास्ति तस्य माता हरीतकी।
कदाचित् कुप्यते माता नैव कुप्यति हरीतकी॥

★ त्रिफला चित्रको दन्ती बृहती कंटकारिका।
स्नुहिसार्क विडंगानि धुतंस्य कुडवं पचेत्॥
तस्य मृद्धाग्नि सिद्धस्य कर्षार्धं पाययेन्नरम्।
शोफ गुल्मोदरानाह प्लीहोदरजलोदरान्॥
नाशयत्युल्बणानेतान् सर्पिर्नाराच संज्ञितम्। (वृ०वि०र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छप्पय

(१)

जगमें जननी सरिस नहीं कोई हितकारी।
उदर माहिं नौ मास रखै सुखकारी प्यारी॥
सूखे सुतहिं सुवाय आपु गीलेमें सोवै।
घिनि नहिं नेकहूँ करै मूत्र मल नितप्रति धोवै॥
जिनिके घर माता नहीं, हर्र तिनहिं माता सरिस।
माँ तो रिसमें चपत दे, हरड़ होय कबहूँ न रिस॥

(२)

नित्य हरड़कूँ खाय पियो पानी ऊपरतें।
मीठो मीठो लगे स्वाद पानीको तिहिते॥
मुखशुद्धीके हेतु हरड़कूँ आपु चबावैं।
पीपर सुण्ठी मिरच नमक सेंधवहु मिलावैं॥
नीबू रसके सङ्गमें, अनुपम स्वाद जनाइगो।
स्वस्थ रहेगो पुरुष वह, नित्य हरड़ जो खाइगो॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीतकी रसायन कल्प

[६]

हरीतकी पञ्चरसा च रेचनी
कोष्ठामयघ्नी लवणेन वर्जिता।
रसायनी नेत्ररुजापहारिणी
त्वगामयघ्नी किल योगवाहिनी ॥ ★

छप्पय

हर्र मातुके सरिस भर्र करि मलहिं निकारे।
नमक छोड़ि रस सकल कोष्ठ त्वक रोगनि जारे॥
अम्मृततें उतपन्न रसायन अति सुखकारी।
शिवा, सुधा है हरड़ वयस्था सब रुजहारी॥
नित्य हरड़ सेवन करो, हरो व्याधि सुखतें रहो।
जननी सम पोषन करे, अमृता हैमवती कहो॥

आयुर्वेद में हरड़ की बड़ी प्रशंसा है। इसमें अमृत के समान गुण हैं। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा है कि एक बार देवराज इन्द्र अमृत पान कर रहे थे। उस अमृत की एक बूँद पृथ्वी पर गिर पड़ी।

★ हरड़ में पाँच रस हैं वह रेचक है, कोष्ठ के रोगों को नाश करने वाली है। केवल इसमें नमकीन रस नहीं है। यह रसायन है। नेत्रों के रोगों को हरण करने वाली है। त्वचा के रोगों को नाश करनें वाली तथा योगवाहिनी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस अमृत की बूँद से सात प्रकार की हरीतकी उत्पत्ति हो गयी।× इसलिए हरीतिका का एक नाम अमृता भी है। इसके बहुत से नाम हैं। उनमें मुख्य नाम ये प्रचलित हैं। १-हरीतकी, २-अभया, ३-पथ्या, ४-कायस्था, ५-पूतना, ६-अमृता, ७-हैमवती, ८-अव्यथा, ९-चेतकी, १०-श्रेयसी, ११-शिवा, १२-वयस्था, १३-विजया, १४-जीवन्ती, १५-रोहिणी, १६-सुधा, १७-वल्या, १८-रसायनफला, १९-पाचनी, २०-प्रमथा, २१-शाका, २२-रुदप्रिया, २३-वनतिक्ता, २४-शक्रसृष्टा, २५-सुधोद्भवा, २६-जया, २७-चेतनकी, २८-प्रपथ्या, २९-जीवप्रिया, ३०-जीवनिका, ३१-भिषग्बरा, ३२-शिवप्रिया, ३३-प्राणदा, ३४-जीव्या, ३५-देवी, ३६-दिव्या, ३७-हिमजा, ३८-गिरिजा आदि-आदि।

हरीतकी के ये सभी नाम सार्थक हैं। इसका नाम हरीतकी क्यों पड़ा ? इस विषय में बताते हैं। यह हर शिवजी के भवन में (कैलाश में) उत्पन्न हुई थी। और इसका रंग भी स्वभाव से हरा था। तथा समस्त रोगों को हरने वाली थी इसीलिए इसका नाम हरीतकी पड़ा।× हरीतकी शास्त्रों में सात प्रकार की बतायी हैं। १-विजया, २-रोहिणी, ३-पूतना, ४-अमृता, ५-अभया, ६-जीवन्ती और ७-चेतकी। इनके स्वरूप लक्षण भी बताये हैं। जैसे जो तुमड़ी के सदृश गोल-गोल और कुछ लम्बी हो वह विजया हरड़ है। जो सर्वथा गोल-

---

× *पपातविन्दुमेनिन्दयां शक्रस्य पिवतोऽमृतम्।*
ततोदिव्यात् समुत्पन्ना सप्तजांतिर्हरीतकी॥
हरस्य भावने जाता हरिता च स्वभावतः।
हरेचु सर्वरोगाश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी॥
(मदनपाल निघण्टु)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मटोल हो वह रोहिणी है। जिसकी गुठली बहुत छोटी हो वह पूतना है। जो आकार में मोटी हो वह अमृता है। जिसमें पाँच रेखायें हो वह अभया है। जो सुवर्ण के सदृश पीतवर्ण की हो वह जीवन्ती है। और जिसमें तीन ही रेखायें हों, उसे चेतकी हरड़ जानना चाहिये। विजया हरड़ विशेषकर विन्ध्याचल पर्वत पर होती है। पूतना, चेतकी हिमालय पर, रोहिणी, सिन्धु नदी के तीर पर, विजया प्रत्येक स्थान पर हो जाती है। अमृता और अभया चम्पा देश में और जीवन्ती सौराष्ट्र देश में, विजया हरड़ ही प्रायः मिलती है। इसका प्रयोग समस्त रोगों में होता है। फोड़े के घाव को भरने के लिए रोहिणी प्रशस्त है। कहीं लेप करना हो तो पूतना हरड़ का प्रयोग करें। विरेचन मे अमृता, नेत्र रोगों में अभया, चूर्ण में चेतकी तथा विजया और जीवन्ती ये दोनों प्रकार की हरड़े समस्त रोगों का हरण करने वाली हैं। आयुर्वेद के बहुत ही न्यून ऐसे योग हैं। जिनमें हरीतकी का प्रयोग न होता हो। हरीतकी सर्व रोगों को हरने वाली है। माता तो कभी-कभी क्रोध में आकर दो चपत भी लगा देती है। किन्तु हरीतकी किसी भी दशा मे कुपित नहीं होती। इसीलिए इसका नाम प्राणदा तथा अमृता है।

एक कथा है—किसी ने यह बात मिथ्या ही उड़ा दी कि 'धन्वन्तरिजी की मृत्यु हो गयी।' इस समाचार से सभी लोग अत्यन्त चिन्तित हुए। अब क्या होगा, कौन रोगों का नाश करेगा, कौन औषधियों को बतावेगा।''

लोगों को अत्यन्त चिन्तित तथा दुखी देखकर हरड़ ने कहा—अरे, तुम लोग इतने चिन्तित क्यों होते हो? धन्वन्तरि नहीं रहे तो न सही। मैं तो हूँ ही। मेरे रहते रोग कैसे रह सकते हैं, मैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो सभी रोगों को नष्ट करने में समर्थ हूँ। मैं श्वास, खांसी, प्रमेह, अर्श, कुष्ठ, सूजन, समस्त उदर रोगों की, कृमि, स्वरभग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, वातगुल्म, आध्मान (अफारा) तृपा (प्यास), वमन, हिचकी कण्डू (खुजली), हृदयरोग, कामला (पीलिया) शूल अनाह, यकृत, अश्मरी, मूत्रकृच्छ, मूत्रपात तथा अंन्य सभी रोगों को नाश करने में समर्थ हूँ। +

यह बात किसी ने जाकर धन्वन्तरीजी से कह दी कि महाराज! हरड़ तो बहुत बढ़-बढ़कर बात कह रही थी। उसका कहना है कि मैं समस्त रोगों को नाश करने में समर्थ हूँ। यह सुनकर धन्वन्तरिजी हँसे और बोले—अच्छा, हरड़ से पूँछना—जो बलहीन अत्यन्त दुर्बल मनुष्य हों, जो लंघन करने से दुर्बल हो गये हो, अत्यधिक पित्त प्रकृति वाले को तथा नवीन ज्वर में तुम्हारा क्या उपयोग है? ×

उसने जाकर हरड़ से ये बातें पूँछी, तब हरड़ ने कहा—"अभी धन्वन्तरीजी मरे नहीं है। उनके अतिरिक्त इन बातों को और कोई जानता ही नहीं।"

\+ रुक्षोण्णा दीपनो मेध्यास्वादु पाका रसायनी।
चाक्षुष्या लघुरायुष्या वृंहणी चानुलोमनी॥
श्वासकासप्रमेहार्शः कुष्ठशोथोदर क्रिमीन्।
वैस्यर्वग्रहणी रोग विवन्ध विषम ज्वरान्॥
गुल्मादध्मानवृषांच्छर्दि हिक्का कण्डू हृदामयान्।
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृत्तथा।
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत्॥

× अध्वातिखिन्नाो बलवर्जितश्च रूक्षः कृशोर्लघनकर्षितश्च।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी विमुक्त रक्तस्तवभया न खादेतः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वास्तव में बलहीन, रुक्ष शरीर वाले, अत्यन्त कृश, लंघन करने से जो बहुत दुर्बल हो गये हों, अत्यधिक पित्त वाले को गर्भवती स्त्री को, जिनका रुधिर निकाला गया हो, नवीन ज्वर वाले को, हनुस्तम्भ रोग वाले को और जिसके शरीर में शोथसूजन हो गयी हो। ऐसे मनुष्यों को हरड़ का सेवन न करना चाहिए क्योंकि हरड़ रेचक होती है। ऐसे लोग बार-बार शौच जायेंगे, तो थक जायेंगे। वीर्य में, रक्त में तथा मल में जीवनी शक्ति है। इनके क्षय होने से मृत्यु हो जाती है। और सब रोगों में हरीतकी पथ्य है।

जितने भी भोज्य पदार्थ हैं, उनमें १-मधुर, २-खट्टा, ३-कड़वा, ४-तिक्त, ५-कषैला तथा ६-नमकीन, ६ रस होते हैं। जैसे—शर्करा है, उसमें मीठा एक ही रस है, नमक है उसमें नमकीन एक ही रस है। मिर्चा है उसमें तिक्त रस एक ही है। मनुष्य को थोड़े बहुत ६ रसों को नित्य खाना चाहिए। हरड़ में नमक को छोड़कर पाँच रस हैं। इसका मज्जा मधुर, नसों में खटाई, डंठल में तिक्त, छाल में कड़वा और अस्थियों में कषेला रस है, इसीलिए इसे पंचरसा कहते हैं। ×

यदि हरड़ में नमक और ऊपर से मिला लिया जाय तो यह षटरस वाली बन जाती है। मधु-शहद को छोड़कर और किसी में भी ६ रस नहीं हैं इसीलिए मधु के साथ औषधि खाने से इसमें दशगुनी शक्ति बढ़ जाती है। हरड़ की सात जाति बतायी हैं, इनके प्रथक्-प्रथक् गुण तथा लक्षण बताये हैं। जैसे चेतकी नाम की हरड़

× पथ्यायामञ्जनि स्वादु स्नाय्यामम्लो व्यवस्थितः।
बृन्तेतिक्तस्तुचि कटुरास्थिस्थस्तुवरो रसः॥

त्वयित इमे ततो विविधनामगुणैः परमे सरित इवार्णवे मधुनि लिल्युरशेषरसाः। (श्री०भा० १० स्क० ८७ अ० ३१ श०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। उसका ऐसा गुण बताया है कि चेतकी हरड़ की वृक्ष की छाया में मनुष्य, पशु-पक्षी, मृगाति जो भी बैठ जाय, उसे उसी समय रेचन होने लगेगा। तुरन्त शौच की इच्छा हो जायगी। उस चेतकी के फल को हाथ में लेकर मुट्ठी में जब तक दबाये रहेगा, तब तक उसे बराबर रेचन होता ही रहेगा। इसीलिये कहा है कि उसे अत्यन्त सुकुमारों को, दुर्बल मनुष्यों को और जो औषधियों से द्वेष करते हों, ऐसे पुरुषों को न देनी चाहिये। × परन्तु अब कहीं चेतकी हरड़ मिलती नहीं। आजकल तो विजया नाम की हरड़ ही मिलती है। इसीलिए भावप्रकाशकार ने इसी के प्रयोग को सर्वश्रेष्ठ और सर्वरोगों में प्रयोग करने को कहा है। क्योंकि यह सभी स्थानों में प्राप्त होती है। सर्व सुलभ है। ×

हरड़ जब बहेड़ा, आँवला के साथ मिल जाती है। तब त्रिफला कहलाती है। इसमें विशेष गुण होता है। हरड़ और आँवला दोनों पृथक्-पृथक् भी रसायन है। बहेड़ा पृथक् रसायन नहीं है। वह आँवला और हरड़ के योग से ही गुणकारक होता है। अतः अब हम पहिले हरड़ के कल्पों का वर्णन करेंगे।

\+ चेतकी पादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षी मृगादयः॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः।
तावद्भिद्ये त वैगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः॥
न धार्य सुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम्।
चेतकी परमाशस्ता हितः सुखविरेचनी॥

× सप्तानामपि जातीनां प्रधाना विजया स्मृता।
सुखप्रयोगा सुलभा सर्व रोगेषु शस्यते॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋतु हरीतकी कल्प

[१]

अच्छी जाति की, घुनी न हों, पुरानी न हों ऐसी हरे रंग की बड़ी हरड़ों को लेकर उनकी गुठली निकालकर उनका चूर्ण बना लें। उस चूर्ण को प्रत्येक ऋतु में उन ऋतुओं के अनुसार द्रव्य मिलाकर एक वर्ष तक सेवन करें, तो उदर रोंगो को लाभ करती है। भोजनोपरान्त रात में लें। मात्रा १ तोला से लेकर २ तोला तक अपनी प्रकृति के अनुरूप।

१. वर्षा ऋतु (श्रावण, भाद्रपद) में सेधा नमक के साथ।

२. शरद ऋतु (क्वार, कार्तिक) में शर्करा के साथ।

३. हैमन्त ऋतु (अगहन, पौष) में सोंठ के चूर्ण के साथ।

४. शिशिर ऋतु (माघ, फाल्गुन) में छोटी पीपल के साथ।

५. वसन्त ऋतु (चैत्र, बैसाख) में मधु के साथ।

६. ग्रीष्म ऋतु (ज्येष्ठ, आषाढ़) में गुड़ के साथ लें, इसी का नाम ऋतु हरीतकी कल्प है। यह भी नित्य प्रयोग में लाने वाला रसायन कल्प है। ×

[२]

१. हरीतकी का आरोग्य चाहने वालों को नित्य ही सेवन करना चाहिये। जिनकी अग्नि मन्द हो। उन्हें सरोंथा से हरड़ के टुकड़े करके रख लेना चाहिये और भोजनोपरान्त दाँतों से चबा-चबाकर शनैः-शनैः खाना चाहिये। इससे जठराग्नि की वृद्धि होती है।

× सिन्धूत्थ शर्करा शुण्ठी कणामधु गुणैः क्रमात्।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायन गुणाषिणा॥
(भावप्रकाश)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. जिनको विष्ठम्भ (कब्जी) रहती हो मल न उतरता हो उन्हें हरड़ को पीसकर उसका चूर्ण बनाकर गुनगुने जल के साथ भोजनोपरान्त लेनी चाहिये।

३. जिनका मल पतला हो गया हो, ब्ार-बार जाना पड़ता हो उनको पानी में पकाकर लेनी चाहिये इससे मल बँध जायेगा।

४. जिनको विशेष कोई रोग न हो आरोग्य कामना के लिये ही लेना हो, उन्हें छोटी हरड़ों को गौ के धृत में अथवा एरेंडी के तेल में भूनकर थोड़ा नमक मिलाकर भोजनोपरान्त नित्य एक दो लेनी चाहिये।★

१. जिनकी प्रकृति कफ प्रधान हो। खांसी होती हो श्लेष्म निकलता हो, शीघ्र-शीघ्र प्रतिप्याय (जुकाम) हो जाता हो। उनका नित्य प्रति हरड़ का चूर्ण सेंधा नमक मिलाकर लेना चाहिये।

२. जिनकी प्रकृति पित्त प्रधान हो, अधिक गर्मी लगती हो, पित्त निकलता हो स्वेद (पसीना) अधिक आता हो उन्हें हरड़ का चूर्ण मिश्री के साथ लेना चाहिये।

३. जिनकी प्रकृति वात प्रधान हो उन्हें घृत के साथ हरड़ लेनी चाहिये।

४. साधारणतया हरड़ को पुरांने गुड़ के साथ खाना चाहिये। गुड़ मिलाकर बड़ी-बड़ी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। उन्हें चूसता रहे या गुड़ मिश्रित गोलियाँ बना लें उन्हें चूसता रहे ये गुड़ मिश्रित गोलियाँ प्राय: सभी प्रकार के रोगों में हितकर हैं। ×

★ चर्विर्ता वर्द्धयत्याग्नि पोशिता मल शोधिनी।
स्विन्नासंग्राहिणी चैव पथ्या प्रोक्ता त्रिदोषनुत्॥

★ लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा।
घृतेन वातजान् दोषान् सर्वरोगान् गुड़ान्विता॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे अनुभूत प्रयोग

[३]

छोटी हरड़ों को दो सेर लेकर गौ के मूत्र में तीन दिन तक भिगोवें। नित्य नया गोमूत्र बदलता रहे। तीन दिन पश्चात् चौथै दिन उन्हें निकालकर छाया में सुखा लें। जब सूख जाँय तो फिर तीन दिनों तक इसी प्रकार भिगोकर छाया में सुखावें। सूखने पर फिर तीन दिनों तक फिर गोमूत्र में भिगोवें। इस प्रकार तीन-तीन दिन की तीन भावनायें दें। तीन भावना देने के उपरान्त सूख जाने पर उन्हें एरण्डी के शुद्ध तेल (कास्ट्रायल) से मन्द-मन्द अग्नि में संके। जब फूल कर लाल पड़ जायँ, तो उन्हें उतार लें नित्य नमक मिलाकर एक से चार पाँच तक जैसी अपनी शक्ति हो भक्षण करें। इसके सेवन से उदर सम्बन्धी सभी प्रायः रोगों को लाभ पहुँचाता है।

[४]

अच्छी नई बड़ी-बड़ी १००० हरड़ों को ले उन्हें गौ के मट्ठा में उबाल ले जब उबल जायँ तो चाकू से उसमें एक ओर से काटकर उनकी गुठली निकाल ले। फिर उनमें निम्नलिखित वस्तुओं का चूर्ण भरकर डोरे से बाँध कर रख ले। जब वे सूख जायँ, तब अपनी प्रकृति के अनुसार एक या दो हरड़ को पीसकर उसका चूर्ण जल के साथ लें। इससे उदर व्याधियाँ शनैः-शनैः नष्ट हो जाती हैं। उसमें भरने वाला चूर्ण इस प्रकार है। उसमें ये वस्तुएँ पड़ती हैं—

छोटी हरड़े	एक पाव
धनियाँ	एक पाव
सौंफ	एक पाव
वायविंडग	एक पाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजमाइन	एक पाव
वावखुम्वा	एक पाव
सोंठ	एक पाव
जीरा	आधा पाव
बड़ी इलायची	आधा पाव
स्याह जीरा	१ छटांक
लोंग	४ तोला
काला नमक	१ पाव
साँवर नमक	१ पाव
सैंधा नमक	१ पाव
पाग नमक	१ पाव
जवाखार	१ तोला
नींबू का रस २०० का	

इन सबका चूर्ण बनाकर उसमें २०० नींबू का रस मिलाकर इस चूर्ण को हरड़ों में भर कर ऊपर से डोरे में बाँध दें, सूखने पर नित्य पीसकर एक या दो हरड़ खाय।

इसी चूर्ण में ८ गड्डी पोदीना पीसकर मिला दे और पाँच किलो घी कुमार कुमारी या ग्वार (का पट्ठा) का गूदा बनाकर मिला दे और दो-तीन दिन तक धूप में रख दे। यह अत्यन्त ही पाचक कुमारी चूर्ण बन जायगा जो उदर रोगों की अत्युत्तम औषधि है। यह अनुभूति योग है।

[५]

दो सेर छोटी (अच्छी) हरड़ों को लेकर नींबू के रस में नींबू के अचार के साथ डाल दें, महीने दो महीने हरड़ें रस में फूलती रहे। तब उन हरड़ों को निकालकर छाया में सुखाकर उनका चूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बना लें। उस चूर्ण में १. सेंधा नकम २. काला नमक ३. सफेद जीरा (भुना) ४. काला जीरा (भुना) ५. सोंठ ६. काली मिरच ७. पीपल ८. अजमोद ९. राई १०. हींग (भुनी) और ११. चित्रक, ये ११ वस्तुयें मिलाकर नींबू अदरक के रस में चने के सदृश गोलियाँ बना लें। प्रातः खायें भोजनोपरान्त एक-दो गोली नित्य खाय। यह पाचक स्वादिष्ट और उदर रोगों के लिये परम हितकर है। विशेषकर कफ प्रधान व्यक्तियों के लिये तो यह अमृत के सदृश है।

वर्धमान हरीतकी कल्प

[६]

छोटी हरड़ों को तीन दिन गोमूत्र में भिगोकर सुखा लें। फिर एक से लेकर क्रमशः नित्य एक-एक बढ़ाते-बढ़ाते सौ तक बढ़ावें। फिर क्रमशः एक-एक घटाते-घटाते एक पर आ जाय। यह २०० दिन का प्रयोग है। हरड़ को साबूत ही निकल जाय शौंच में भी वे साबूत निकलेंगी। किन्तु जैसे हाँथी कपित्थ को साबूत ही निकल जाता है। उसके शौंच में भी वह साबूत ही निकलता है। किन्तु उसे फोड़ो तो उसके भीतर गूदा नहीं रहता। इसी प्रकार हरड़ का रस, रस के साथ मिल जाता है। हरड़ का फुफ्फुस साबूत ही निकलता है। इस वर्धमान हरीतकी कल्प से नवीन अर्श तथा उदर सम्बन्धी अन्य रोगों में अत्यन्त लाभ होता है।

हरीतकी मोदक

[७]

अच्छी जाति की बड़ी २० हरड़ का चूर्ण बना लें। उसमें एक छोटी पीपल १ तोला, २. चित्रक की जड़ की छाल ४ तोला, ३. दन्ती ४ तोला, ४. निशोथ १ तोला, इन चारों वस्तुओं का चूर्ण हरड़

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के चूर्ण में मिला दे। फिर ३२ तोला पुराना गुड़ लेकर उस चूर्ण को गुड़ में मिलाकर उसके १० लड्डू बना लें। शुभ दिन तथा शुभ नक्षत्र में प्रातःकाल १ मोदक उष्ण जल के साथ लें। पिर १०वें दिन दूसरा मोदक खाय। इस दश-दश दिन के अन्तर एक-एक लड्डू खाय। यह ८२ दिन का प्रयोग है। यदि १ लड्डू को पचाने की सामर्थ्य न हों तो आधा लड्डू ही खाय किन्तु दश दिन का अन्तर देकर खाय। इन मोदकों के सेवन से संग्रहणी, पाण्डुरोग (पीलिया) खुजली, शरीर में जो गोल-गोल चकत्ते पड़ जाते हैं ऐसा कोढ़ रोग, अर्श तथा सभी प्रकार के रोगों में लाभ होता है। इसके सेवन में किसी विशेष पथ्य की भी आवश्यकता नहीं। मिर्च, खटाई, तैल आदि को छोड़कर जो साधारण भोजन करता हो उसे ही करता रहे। ★

[८]

एक, दो अथवा तीन हरड़ अपनी प्रकृति के अनुसार सेंधा नमक मिलाकर उष्ण अथवा शीतल जल के साथ लें। एक वर्ष में एक सहस्र हरड़े पेट में पहुँच जायँ; और पथ्य भोजन करे। जितना पच सके घृत और दुग्ध का सेवन करे। घृत से अथवा तैल से तली हुई वस्तुओं को, वासी, उड़द की पिट्ठी विष्ठम्भकारी भारी पदार्थों

★ गुडस्याष्ट पले पथ्या विंशतिः स्यातजलं पलम्।
दन्तीचित्रकयोः कर्षोपिप्पली त्रिवृतोर्दशा॥
प्रकल्प्य मोदकानेकं दशमे दशमेऽहनि।
उष्णाम्भोऽनुपिवेत् खादेत् तान सर्वानविधिनाऽमुना॥
एते निष्परिहाराः स्युसर्वव्याधि निवर्हणाः।
विशेषाद् ग्रहणो षाण्डु कण्डूकोढाशंसां हिताः॥
(श्रष्टाङ्गहृदय २ अ०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को न खायँ प्रातः जल पीवे, भोजनोपरान्त थोड़ा नमक जीरा अथवा सोंठ मिलाकर तक्र पीवे और रात्रि में पिप्पली पाक दुग्ध का पान करे। पाव भर दूध में पाव भर पानी मिलाकर एक छोटी पीपल डालकर पकावे पानी जल जाय दूध रह जाय तो मिश्री मिलाकर पहिले पीपल को चबाकर ऊपर से दूध पी ले। यही पिप्पली पाक दुग्ध है। इस प्रकार एक सहस्त्र हरड़े पेट में पहुँचने से उदर सम्बन्धी रोगों को अत्यन्त लाभ होगा।

ये तो हमने हरीतकी के सर्वसाधारण के लिये कल्प बताये अब कुटी प्रवेश करके काया कल्प का एक प्रयोग लिखकर इस हरीतकी कल्प अध्याय को समाप्त करते हैं।

हरीतकी रसायन

[१]

५०० हरड़ और ५०० आँवले तथा एक सहस्त्र पीपल इन तीनों को परिपूर्ण वीर्य वाले पुष्ट युवा ढाक-पलाश के-क्षार से भावित करे फिर उन्हें निकालकर किसी पात्र में रख ले जब क्षारोदक सूख जाय तब इन्हें छाया में सुखाकर सबकी गुठलियाँ निकालकर चूर्ण बना लें तोल में जितना सबका चूर्ण हो उससे चतुर्थांश शर्करा, चूर्ण से चौगुना मधु और घृत मिलाकर घी के चिकने घड़े में भरकर उसका मुख बन्द करके स्वच्छ भूमि में गड्ढा खोदकर उस घड़े को गाड़ दे । छै महीने पश्चात उसे निकाल ले। तब पंच कर्म करके शरीर को शुद्ध करने के उपरान्त शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल अपनी शक्ति के अनुसार एक तोला दो तोला चार तोले तक नित्य सेवन करे, सदा पथ्य भोजन करे, आहार विहार पथ्य रखे। इसके सेवन से सौ वर्षों तक मनुष्य वृद्धावस्था रहित होकर जीवित रह सकता है। मूल में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाठ आमलक सहस्त्रं पिप्पली सहस्त्र संप्रयुक्तम्" है किन्तु अष्टाङ्ग हृदय में अभयामक सहस्त्रं है। × इसलिये हरीतकी रसायन कहा गया है। हरीतकी आँवला और पिप्पली ढाक के क्षारोदक में डुबाकर रखने को कहा गया है। क्षारोदक बनाने की विधि इस प्रकार है।

अच्छे युवा ढाक को जलाकर उसकी राख ले। तोल में जितनी राख हो उसका ६ गुना जल डालकर मट्ठा की भाँति बिलोड़ना चाहिये। बिलोड़कर उसे दिन भर रखा रहने दे। दूसरे दिन शनैः-शनैः ऊपर के जल को राख से नितार कर रख ले इस प्रकार २१ बार करना चाहिये। फिर इस सम्पूर्ण नितरे हुए जल को पकाकर क्षार कर लेते हैं। इस जल में क्षार का सम्पूर्ण भाग आ जाता है। इसी को क्षारोदक कहते हैं। ढाक का वृक्ष भी रसायन है।

इस प्रकार शास्त्रों में हरड़ के अनेक प्रयोग बताये गये हैं। शास्त्रों में तो सुवर्ण के, मोती आदि के अनेकों मूल्यवान प्रयोग हैं। किन्तु निर्धनों के लिये हरीतकी से बढ़कर सरल सुगम सर्वोपयोगी सर्वरोगी नाशक कोई अन्य रसायन नहीं है। अश्विनी कुमार संहिता में कहा है—दरिद्र पुरुषों के लिये हरीतकी रसायन ही एकमात्र सुलभ है। × और कोई प्रयोग न बन सके तो दो हरड़ों का चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन प्रातः खाकर ऊपर से गर्म जल पी लिया करे। तो जैसे अग्नि वायु का संयोग पाकर बलवान बन जाती है। प्रज्वलित हो

× अभयामल सह्स्त्रं निरामयं पिप्पलीसहस्त्रयुतम।
तरुषपलाशक्षारद्रवीकृतं स्थापयेत् भाण्डे।।
(अष्टाङ्गहृदय उ० स्थ)

★ हरीतकी दरिद्राणां सुखोपाय रसायनम्। (अश्विनी कु० सं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठती है। उसी प्रकार हरड़ गुड़ का संयोग पाकर परम वीर्य सम्पन्ना बलवती बन जाती है। गुड़ मिश्रित हरीतकी के ऊपर गर्म जल पीवे तो चिरकाल का रोगी भी निरोग बन जाता है। यह विरेचक रसायन और सर्वरोग नाशक है। × हरड़ किसी भी प्रकार पेट में पहुँच जाय वह माता की भाँति हितकारिणी ही होगी। माता तो कभी-कभी कुपित हो जाती है। विक्रिया को प्राप्त हो जाती है। किन्तु उदरस्थ हरीतकी कभी भी कुपित नहीं होती। ★

इसीलिये आरोग्य प्राप्ति की इच्छा वाले को नित्य नियम से हरीतकी का सेवन करना चाहिये अब हम एक श्लोक लिखकर इस अध्याय को समाप्त करते हैं। आगे आमल की रसायनों के कुछ प्रयोगों का वर्णन करेंगे। +

× यथा वैश्वानरो युक्तो बलवान वायुनाभवेत।
तथा वीर्य समापन्ना गुडेन स्याद् हरीतकी॥
यथा कथं चिद् गुडमिश्रितैषा पीता नरेवाप्यथवापिलीढ़ा।
दुरासदांश्चैव चिरस्थितांश्च गदान्नराणमगदान् करोति॥
(नवनीतक २, ११-३०, ३१)

★ हरीतकीं मनुष्याणां मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी॥
सदा हिता मनुष्यस्य मातेव हितकारिणी।
माताऽपि विक्रियां यातिनोदरस्था हरीतकी॥
(नावनीतक)

× हरि हरीतकी चैव गायत्रीं च दिने दिने।
मोक्षारोग्यतपस्कामी चिन्तवेत् भक्षयेत् जपेत्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छप्पय

नित्य तीन तुम काम करो जगमें सुख पाओ।
लोक और परलोक माहिँ निरभय बनि जाओ॥
नित हरि चिन्तन करो मोक्षकी पदवी पाओ।
द्वै हरितकी नित्य पुराने गुड़ सँग खाओ॥
नित्य हर्र सेवन करो, रोग सकल मिटि जायँगे।
गायत्री जप नित करो, तपसी पदवी पायँगे॥

(अप्रकाशित."कायाकल्प की कुछ रसायनों" से उद्धृत)

हमने "काया कल्प की कुछ रसायनें" नामक ग्रन्थ कई वर्ष पहिले लिखा था। उसके कुछ प्रयोगों को हम प्रयोग करके अनुभव कर रहे हैं। अभी वह पूर्ण नहीं हुआ है, पूर्ण होने पर पुस्तक प्रकाशित की जावेगी। अभी उसके प्रकाशन में कुछ विलम्ब लग सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री हरि : ॥

पूज्य श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

१. भागवती कथा–११८ खण्डों में, प्रतिखण्ड का मू० १५.०० डाक व्यय पृथक
२. श्री भागवत चरित–लगभग ९०० पृष्ठ की, सजिल्द — मू० ७५.००
३. सटीक भागवत चरित– (दो खण्डों में)– एक खण्ड का — मू० १०१.००
४. बदरीनाथ दर्शन–बदरीनाथ यात्रा पर पर खोजपूर्ण महाग्रन्थ — मू० २५.००
५. महात्मा कर्ण–शिक्षाप्रद रोचक जीवन, पृष्ठ सं० ३५० — मू० २०.००
६. मतवाली मीरा– भक्ति का सजीव साकार स्वरूप — मू० १२.००
७. भक्तिचरितावली प्रथम खण्ड मू० १०.०० द्वितीय खण्ड — मू० १५.००
८. मुक्तिनाथ दर्शन–मू० १५.०० ९. गोपालन शिक्षा — मू० १५.००
१०. श्री चैतन्य चरितवाली (पाँच खण्डों में) सजिल्द — मू० १२५.००
११. श्रीकृष्ण लीला दर्शन (तीन खण्डों में) — मू० ६३.००
१२. श्री शुक– श्री शुकदेवजी के जीवन की झांकी (नाटक) — मू० ७.००
१३. शोक शान्ति–शोक की शान्ति करने वाला रोचक पत्र — मू० ४.००
१४. मेरे महामना मालवीयजी– — मू० ३.००
१५. बाल महाभारत — मू० १५.००
१६. भारतीय संस्कृति और शुद्धि (शास्त्रीय विवेचन) — मू० ४.००
१७. गोविन्द दामोदर शरणागत स्तोत्र–(छप्पय छन्दों में) — मू० २.००
१८. सत्यनारायण की कथा–छप्पय छन्दों सहित — मू० ५.००
१९. भागवत चरित सगीत सुधा मू० ५.५०
२०. श्री कृष्ण चरित– मू० २०.००
२१. राधवेन्द्र चरित सटीक मू० २०.००
२२. महावीर हनुमान मू० १२.००
२३. सार्थ छप्पय गीता मू० २०.००
२४. श्री हनुमत् शतक मू० ३.००
२५. छप्पय विष्णु सहस्रनाम मू० १०.००
२६. राघवेन्द्र चरित– मू० १०.००
२७. भागवती कथा की बानगी मू० ७.००
२८. प्रयाग माहात्म्य — मू० २.००
२९. वृन्दावन माहत्म्य — मू० १.००
३०. प्रभुपूजा पद्धति — मू० ३.००
३१. बिल्व फल अमृत फल — मू० ५.००
३२. नर्मदा दर्शन — मू० २०.००
३३. श्री छप्पय दुर्गासप्तशती — मू० ७.००
३४. नाम संकीर्तन महिमा — मू० ५.००
३५. निःश्वास — मू० २.००
३६. भागवत चरित की बानगी — मू० ७.००

पुस्तकों के आर्डर के साथ पूरा मूल्य एवं डाक खर्च चुका देने पर आपके पास रजिस्ट्री से पुस्तके भेज दी जायेंगी।

पता – व्यवस्थापक–संकीर्तन-भवन प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) प्रयाग-२२१५०६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री हरिः ॥

पूज्यपाद जी प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज कृत "भागवती कथा" "भागवत चरित" तथा अन्यान्य दिव्य ग्रन्थों की

संक्षिप्त-सूची

श्री पूज्यपाद ब्रह्मचारीजी महाराज लिखित धार्मिक अनुपम ग्रन्थों से प्रायः सभी हिन्दी भाषा-भाषी धर्मप्राण पाठक पूर्णरीत्या परिचित हैं। श्री महाराजजी द्वारा लिखित श्री चैतन्य-चरितावली भारत में ही नहीं, विश्व के साहित्य में अनुपम ग्रन्थ है। गुजराती, मराठी, तेलंगु, तामिल, मलयालम तथा देश की अन्यान्य भाषाओं में इसके अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी लिखी भागवती कथा हिन्दी साहित्य में बेजोड़ ग्रन्थ है। इसे हिन्दी भाषा का समस्त धार्मिक कोश कहना चाहिये। संस्कृत साहित्य में गीता, उपनिषदें और ब्रह्मसूत्र इन तीनों को प्रस्थानत्रयी कहते हैं। महाप्रभु श्री बल्लभाचार्य जी इनमें श्रीमद्भागवत को भी और सम्मिलित करके प्रस्थान चतुष्टयी बताते हैं। भागवती कथा में इन चारों की ही विस्तृत सरस-सरल सर्वोपयोगी व्याख्यायें हैं। इन सबका संक्षिप्त परिचय पढ़िये—

१. भागवती कथा— यह एक विस्तृत वृहद ग्रन्थ है। अब तक इसके ११८ खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक खण्ड दो सौ-ढाई सौ पृष्ठ का होता है, सादे तथा रंगीन चित्र भी रहते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। प्रत्येक खण्ड का इस मँहगाई काल में भी केवल १५ रुपया न्यौछावर है। डाक-व्यय पृथक। भागवती कथा के प्रथम ६० खण्डों में तो भागवत् सम्बन्धी सरस-सरल सुमधुर कथायें हैं। प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में एक श्रीमद्भागवत का छँटा श्लोक होता है, उसी भाव का ब्रजभाषा का छप्पय, फिर उस अध्याय की भूमिका, तदनन्तर विषय विवेचन, एक-दो दृष्टान्त की कहानियाँ, उपसंहार और फिर अन्त में छप्पय। यह क्रम आदि से अन्त तक यथावत् है। प्रत्येक अध्याय एक प्रकार से स्वतंत्र है। केवल छप्पयों को ही पढ़ते जाओ तो पूरा विषय आ जायगा। ६० भागों में तो कथा भाग है, दो भागों में माहात्म्य और ६ भागों में भागवती स्तुतियाँ हैं। इस प्रकार ६८ भागों में भागवत विवेचन है। सोलह भागों में गीता की सरल-सुगम व्याख्या है। प्रत्येक अध्याय में दो श्लोकों की व्याख्या है, फिर २३ भागों मे १९१ उपनिषदों का विवेचन है। आज तक सभी आचार्यो ने दश उपनिषदों के ही सम्बन्ध में लिखा है। १९१ उपनिषदों का विवेचन संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं है। हिन्दी भाषा में यह प्रथम प्रयास है। १०७ वें भाग में दर्शनों का संक्षिप्त परिचय और १० वें भाग से ११८ वें भाग तक ब्रह्मसूत्रों पर विवेचन है।

इस प्रकार भागवती कथा समस्त आर्य वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा इतनी सरल-सुगम सुबोध है कि बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, पठित-अपठित सभी सरलता से समझ सकते हैं। देश के कोने-कोने में सहस्त्रों स्थानों पर इसकी नित्य नियमित कथायें होती है। जिनसे नित्य लाखों स्त्री-पुरुष लाभ उठाते है। प्रत्येक ग्राम में प्रत्येक घर में भागवती कथा रहने से धार्मिक-वातावरण बन जाता है।

उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बहुत-सी जिला परिषदों के पुस्तकालयों के लिये सरकार द्वारा स्वीकृत है। ६० रुपया भेजकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थायी ग्राहक बनें। वर्ष के १२ खण्ड आपको घर बैठे रजिस्ट्री से मिल जाया करेंगे।

विद्वानों, नेताओं तथा प्रतिष्ठित पुरुषों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हमारा बड़ा सूची-पत्र बिना मूल्य मँगाकर बहुत से विद्वानों की सम्मतियाँ पढ़ें। यह ग्रन्थ किसी का अक्षरशः अनुवाद नहीं स्वतंत्र विवेचन है।

२. भागवत चरित सप्ताह (पद्यों में)—यह भागवत का सप्ताह है। छप्पय छन्दों में लिखा है। सैकड़ों सादे चित्र ५-६ बहुरंगे चित्र हैं कपड़े की सुन्दर जिल्द है, लगभग हजार पुष्ठों की पुस्तक का मूल्य ७५ रु० । सहस्रों नर-नारी इसका नित्य नियम से पाठ करते हैं। इससे लीला करने वाले लीला भी करते हैं अब तक इसके ५।५ हजार के ९ संस्करण छप चुके हैं।

३. भागवत चरित (सटीक दो भागों में)—अनुवादक—पं० रामानुज पाण्डेय, बी० ए० विशारद् 'भागवत चरित व्यास' भागवत चरित की सरल हिन्दी में सुन्दर टीका है, प्रत्येक खण्ड में ९०० पृष्ठ हैं, लगभग ५०० सादे चित्र हैं। ४।५ रंगीन चित्र मूल्य २०२ रुपया। एक खण्ड १०१ रुपया।

४. बद्रीनाथ दर्शन—श्री बद्रीनाथ दर्शन यात्रा पर यह बड़ा ही खोजपूर्ण ग्रन्थ है। बद्रीनाथ यात्रा की संभी आवश्यक बातों का तथा समस्त उत्तराखण्ड के तीर्थों का इसमें वर्णन है। लगभग सवा चार सौ पृष्ठों की सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २५ रुपया भारत सरकार द्वारा अहिन्दी प्रान्तों के लिये स्वीकृत है।

५. महात्मा कर्ण—महाभारत के प्राण महात्मा कर्ण का यह अत्यन्त ही रोचक, शिक्षाप्रद तथा आलोचनात्मक जीवन-चरित्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३४० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २० रुपया। जनता ने इसे बहुत ही पसंद किया है। इसके ७ संस्करण छप चुके हैं।

६. मतवाली मीरा—मीरा बाई के दिव्य जीवन की सजीव झाँकी तथा उनके पदों की रोचक भाषा में व्याख्या। २२४ पृष्ठ की सचित्र पुस्तक का मू० १२ रु० है। यह इसका सातवाँ संस्करण है।

७. नाम संकीर्तन महिमा—नाम संकीर्तन महिमा के ऊपर जितनी भी शङ्कायें उठ सकती हैं उनका शास्त्रीय ढङ्ग से युक्तियुक्त विवेचन है। मूल्य ५ रुपया। इसे पढ़ लेने पर भगवन्नाम संकीर्तन पर किसी भी प्रकार की शङ्का नहीं हो सकती।

८. श्रीशुक (नाटक)—श्रीशुकदेव मुनि के जीवन की दिव्य झाँकी। पृष्ठ सं० १००, मूल्य ५ रुपया।

९. भागवती कथा की बानगी—भागवती कथा के खण्डों के कुछ अध्याय बानगी के रूप में इसमें दिये गये हैं। इसे पढ़कर आप भागवती कथा की शैली समझ सकेंगे। पृ० ९६ मूल्य ७ रुपया।

१०. शोक शान्ति—अपने प्रिय स्वजनों के परलोक प्रयाण पर सान्त्वना देने वाला मार्मिक पत्र। शोक सन्तप्तों की संञ्जीवनी बूटी है। इससे लाखों शोक संतप्त नर-नारियों को शान्ति प्राप्त हुई हैं, जिनके स्वजन अकाल में काल कवलित हुए हैं। पृष्ठ ६४, मूल्य ४ रुपया। षष्टम् संस्करण।

११. मेरे महामना मालवीयजी—महामना मालवीय जी के सुखद संस्मरण। १३५ पृष्ठ की छोटी पुस्तक, मूल्य ३ रुपया।

१२. भारतीय संस्कृति और शुद्धि—क्या अहिन्दु पुनः हिन्दु बन सकते हैं, इस प्रश्न का शास्त्रीय ढंग से प्रमाणों सहित विवेचन बड़ी ही मार्मिक भाषा में किया गया है, वर्तमान समय में जब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधर्मी अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। पृष्ठ ७६ मूल्य ४ रुपया।

१३. प्रयाग माहात्म्य—तीर्थराज प्रयाग के माहात्म्य पर ३२ पृष्ठ की छोटी-सी पुस्तिका। मूल्य २ रुपया।

१४. वृन्दावन माहात्म्य—श्रीवृन्दावन के माहात्म्य पर लघु पुस्तिका। मूल्य १ रुपया।

१५. राघवेन्द्र चरित—(छप्पय छन्दों में) श्रीरामचन्द्रजी की कथा के ९ अध्याय भागवत चरित से पृथक् छापे हैं। राम-भक्तों को नित्य पाठ के लिये उपयोगी है। पृ०सं० १६० मूल्य ७ रुपया अर्थ सहित १० रुपया।

१६. प्रभुपूजा पद्धति—भगवान् की पूजा करने की सरल सुगम शास्त्रीय विधि इसमें श्लोकों सहित बताई है। श्लोकों का भाव दोहाओं में भी वर्णित है। मूल्य ३ रुपया।

१७. गुरु-भक्ति और एकलव्य—रङ्गमञ्च पर खेलने योग्य धार्मिक नाटक। मूल्य ५ रुपया।

१८. भागवत चरित की बानगी—इससे भागवत चरित के पद्यों की सरसता जान सकेगे। पृष्ठ १०० मूल्य ७ रूपया।

१९. गोविन्द दामोदर शरणागत स्तोत्र—(छप्पय छान्दों में) दोनों स्तोत्र हैं। मूल स्तोत्र भी दिये हैं। मूल्य ७ रुपया।

२०. श्रीकृष्ण चरित—भागवत चरित से यह पद्यों में श्रीकृष्ण-चरित पृथक छापा गया है। पृ०सं० ३५० मू० २० रुपया।

२१. गोपालन शिक्षा—गौ कैसे पालनी चाहिये। गौओं की कितनी जाति हैं, उन्हें कैसे आहार देना चाहिये। बीमार होने पर कैसे चिकित्सा का जाय। कौन-कौन देशी दवाएँ दी जायँ, इन सब बातों की विशद् वर्णन है। पृ० २०४ मूल्य १५ रुपया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२. मुक्तिनाथ दर्शन—नेपाल में सुप्रसिद्ध मुक्तिानाथ तीर्थ है। यात्रा का बहुत ही हृदयस्पर्शी वर्णन है। नेपाल राज्य तथा नेपाल के समस्त तीर्थों का इसमें विशद वर्णन है। मूल्य १५ रुपया।

२३. आलवन्दार स्तोत्र मूल तथा छप्पय छन्दों में—अनुदित श्री वैष्णव सम्प्रदाय के महामुनीन्द्र श्रीमत् यमुनाचार्य कृत यह स्तोत्र सर्वमान्य तथा बहुत प्रसिद्ध है। ५ बार में १९५०० प्रतिया छपी हैं। मूल्य २ रुपया।

२४. रास पंचाध्यायी—भागवत चरित से रास पंचाध्यायी पृथक छापी गई है। मूल्य ७ रुपया।

२५. गोपी गीत—श्रीमद्भागवत के गोपी गीत का उन्हीं छन्दों में ब्रजभाषा अुनवाद है। बिना मूल्य वितररित की जाती है।

२६. श्रीप्रभु पदावली—श्रीब्रह्मचारीजी के स्पुट पदों का सुन्दर संग्रह है। पृष्ठ सं० १२२, मूल्य ७ रुपया ५० पैसे।

२७. परम साहसी बालक ध्रुव—१०० पृष्ठ की पुस्तक मूल्य ७ रुपया।

२८. सार्थ छप्पय गीता—गीता के श्लोक एक ओर मूल और अर्थ सहित छापे हैं। उनके सामने अर्थ की छप्पय है। सचित्र मूल्य १५ रुपया।

२९. हनुमत् शतक—नित्य पाठ करने योग्य यह पुस्तक बहुत ही सुन्दर है। इसमें १०८ छप्पय हैं, सुनदर हनुमानजी का एक बहुरङ्गा तथा २१ सादे चित्र है। मूल्य ३ रुपया।

३०. महावीर हनुमान्—श्री ब्रह्मचारीजी महाराज ने श्री हनुमानजी का यह विस्तृत जीवन-चरित्र भागवती कथा की भाँति लिखा है, इसमें २१ अध्याय हैं। पृष्ठ सं० २०६ मूल्य १२ रुपया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१. भक्त-चरितावली (दो भागों में)—यदि आप चाहते हैं कि हम भी प्रभु के भक्तों की गाथा पढ़कर, भक्ति में आत्मविभोर होकर प्रभु की दिव्य झाँकी की झलक का दर्शन करें तो आज ही भक्त चरितावली के दोनों भाग मँगाकर पढ़ें। भाग (१) पृष्ठ ४४४ मूल्य २० रुपया। भाग (२) पृष्ठ ३०३ मूल्य १५ रुपया।

३२. छप्पय भर्तुहरि शतकत्रय—श्रीभर्तुहरि के नीति, श्रृंङ्गार और वैराग्य तीनों शतकों का छप्पय छन्दों में भाव अनुवाद। पुस्तक बहुत ओजस्वी कविता में है। मूल्य १५ रुपया।

३३. श्रीसत्यनारायण व्रत कथा (माहात्म्य)—छप्पय छन्दों में श्लोक सहित साथ ही पूजा पद्धति भी संक्षेप में दी गई है। मूल्य ५ रुपया।

३४. छप्पय विष्णु सहस्रनाम तथां दोहा—भाष्य सहित सहस्र नामों के सहस्र दोहे। मूल्य १० रुपया।

३५. भागवत चरित सङ्गीत सुधा—(स्वरकार पं० बंशीधर शर्मा 'भागवत चरित व्यास') भागवत चरित के छप्पय छन्दों को तथा पद स्तुतियों को संगीत के स्वरों में विविध रागों में लिपिबद्ध किया गया है। मूल्य ५ रुपया ५० पैसे।

३६. सूक्त-त्रय (सार्थ छप्पय सहित)—(१) पुरुष-सूक्त (२) श्रीसूक्त और (३) लक्ष्मीसूक्त, भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणजी के मनोहर चित्र के साथ न्योछावर ७ रुपया।

३७. निःश्वास—आज से ४०-४५ वर्ष पुर्वश्री महाराजजी अपनी दैनन्दिनी में कुछ मन को समझाने के निमित्त उपदेश लिखते थे। उन्हें आपके एक परमप्रिय भक्त श्री ने निःश्वास नाम से छपा दिया, इसके कई संस्करण हिन्दी तथा अंग्रेजी में छप चुके हैं। यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोटी-सी पुस्तक बहुत ही उपादेय है। इसके उपदेश सीधे हृदय पर चोट करते हैं। मूल्य २ रुपया।

३८. भारत-यात्रा तीर्थ माहात्म्य—न्यौछावर २ रुपया।

३९. शुभ विवाह मङ्गलमय हो।

वर-वधु को शुभशिक्षा तथा आशिर्वाद अमूल्य।

४०. श्रीकृष्णलीला दर्शन—भगवान् श्यामसुन्दर ने ब्रज में जो लीलाएं की हैं उसका दिग्दर्शन बहुत ही ललित भाषा में किया गया है। यह तीन खण्डों में है प्रत्येक खण्ड का मूल्य सजिल्द २१ रुपया।

४१. विल्वफल अमृत फल—आयुर्वेद तथा धार्मिक दृष्टि से बिल्व का क्या माहात्म्य है, इसका बड़ी रोचक भाषा में वर्णन किया है। लगभग १०० पृष्ठ की परम उपयोगी पुस्तक का मूल्य ५ रुपया।

४२. नर्मदा दर्शन—श्री ब्रह्मचारीजी महाराजजी ने मोटर द्वारा नर्मदा परिक्रमा की है। उसका विवरण इस पुस्त कमें है। मूल्य २० रुपया।

४३. भागवत महिमा नाटक—श्री भद्भागवत माहात्म्य की कथा का बड़े ही भावमय शब्दों में वर्णन किया गया है। मूल्य ५.५० पैसे।

४४. श्रीछप्पय दूर्गा सप्तशती मू० १० रुपया

४५. हर्र ! हर्र !! हर्र !!! हरीतकी रसायन मूल्य ५ रुपया

४६. कयाकल्प— मूल्य ३१ रुपया

४७. बाल महाभारत— (प्रेस में)

४८. श्री ओंकारेश्वर माहात्म्य— (प्रेस में)

पता—संकीर्तन भवन, पो० झूँसी, इलाहाबाद—२२१ ५०६ (उ०प्र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री श्री चैतन्य-चरितावली

बङ्गदेश मे प्रादुर्भूत श्री श्री चैतन्य महाप्रभु जिन्हें गौराङ्ग महाप्रभु भी कहते हैं ऐसा कौन-सा भगवत् भक्त होगा जो उनका नाम नहीं जानता होगा। आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व पूज्य श्री ब्रह्मचारी जी ने भाई जी श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार के आग्रह पर ५ भागों में श्री श्री चैतन्य-चरितावली नाम से चैतन्य महाप्रभु का जीवन चरित लिखा था। देश-विदेशों की जनता में यह इतना लोक प्रिय हुआ कि कुछ ही दिनों में इसके साथ संस्करण छप गये। गुजराती, मराठी, तेलगु, तामिल, मलयालयम तथा अन्यान्य अनेकों भाषा में इसके अनुवाद छपे और सभी ने इसकी मुक्तकण्ठ से सराहना की। कागद की कमी तथा अनय कारणों से २०-२५ वर्ष से गीता प्रेस ने इसका छापना बन्द कर दिया । जनता मे इसकी निरन्तर बढ़ती हुई माँग को देखकर हमने इस मँहगायी में भी इसके पाँच खण्डों को छापा है। पचास वर्षों में कागद स्याही और अन्यान्य वस्तुओं का मूल्य बीस गुने से भी अधिक हो गया है। फिर भी हमने इनका मूल्य कम-से-कम रखा है। इनका विवरण इस प्रकार है।

१. **श्री चैतन्य-चरितावली**—प्रथम खण्ड इसमें महाप्रभु के जन्म से लेकर अध्यापकी पर्यन्त ३९ अध्याय है। पृष्ठ २९४, ६ तिरंगे सुन्दर भावपूर्ण चित्र सजिल्द मूल्य २० रुपया।

२. **श्रीचैतन्य-चरितावली**—द्वितीय खण्ड इसमें सर्वप्रथम संकीर्तन से लेकर संन्यास पर्यन्त ४१ अध्याय हैं। पृष्ठ सं० ३०३, भावपूर्ण ४ रङ्गीन चित्र सजिल्द का मूल्य २० रुपया।

३. **श्रीचैतन्य-चरितावली**—तीसरा खण्ड इसमें संन्यास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीक्षा से लेकर दक्षिण यात्रा के विचार पर्यन्त २१ अध्याय हैं। भावपूर्ण ७ रंगीन चित्र हैं। पृष्ठ ३८४ सजिल्द मूल्य २५ रु०

४. श्रीचैतन्य-चरितावली—चौथा खण्ड इसमें प्रभु की वृन्दावन यांत्रा से लेकर श्री रघुनाथ दास गोस्वामी का उत्कट वैराज्य पर्यन्त २४ अध्याय है। ५ भावपूर्ण रंगीन चित्र हैं। पृष्ठ सं० २३४ सजिल्द का मूल्य १५ रुपया।

५. श्रीचैतन्य-चरितावली—पाँचवाँ, खण्ड इसमें छोटे हरिदास को स्त्री दर्शन के खण्ड से लेकर विरहोन्माद की दशाओं का वर्णन तथा ग्रन्थ समाप्ति पर्यन्त ३० अध्याय हैं। भावपूर्ण रङ्गीन ४ चित्र हैं पृष्ठ सं० २८१ सजिल्द का मूल्य २० रुपया आज ही मँगाइये।

बिल्वफल-अमृतफल

आयुर्वेद तथा धार्मिक दृष्टि से बिल्व का क्या माहात्म्य है, इसका बड़ा रोचक भाषा में वर्णन किया है। बेल की जड़, पत्ते, फूल, फल, वल्कल, कांटे तथा छाया सभी का शास्त्रीय उपयोग बताया है। बिल्व की सूखी बेलगिरी कौन-कौन सी औषधियों में काम आती है, उन औषधियों का नाम गिनाया है। बेल का फल पेट के समस्त रोगों के लिये जैसे अर्श, अतिसार, संग्रहणी आदि के लिये रामबाण औषधि है, बिल्व का किस प्रकार सेवन किया जाय, बिल्व से कौन-कौन सी औषधियाँ बनती हैं और उनसे कितने लोग लाभान्वित हुए हैं, इन सब बातों का सप्रमाण वर्णन है। विल्व के बीजों के तेल से किस प्रकार काया-कल्प हो सकता है, इन सभी उपयोगी बातों का इसमें सटीक वर्णन है।

लगभग १०० पृष्ठ की परम उपयोगी पुस्तक का मूल्य ५ रुपये मात्र ही हैं।

पता—संकीर्तन भवन, पो० झूसी (जिला इलाहाबाद)

Krishnakant Sharma Collection, Nainagar

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नर्मदा-दर्शन

पूज्य ब्रह्मचारी जी का यह अभी प्रकाशित होने वाला परम दिव्य न्यूनतम ग्रन्थ है। श्री महाराज जी ने लगभग ३०० यात्रियों के साथ मोटरों द्वारा श्री नर्मदाजी की २६ दिनों में परिक्रमा की थी। मध्य प्रदेश तथा गुजरात के प्रत्येक नगर तथा ग्रामों की जनता ने यात्रियों का कैसा भव्य स्वागत किया, इसका बड़ा ही रोचक वर्णन है। मोटर से यात्रा करने पर मार्ग में कौन-कौन से ग्राम नद-नदी तथा तीर्थ पड़ते हैं उनका सविस्तार वर्णन है। यदि पैदल यात्रा करें तो नर्मदा किनारे-किनारे कौन-कौन से घाट नगर ग्राम पड़ेंगे उनका विस्तार के साथ वर्णन है। सब तीर्थों की पौराणिक सरस रोचक कथायें हैं। कौन से तीर्थ से आगे का तीर्थ कितनी दूर है इस प्रकार नर्मदा किनारे के दोनों तटों के समस्त तीर्थों का विधि विधान पूर्वक वर्णन है। पुस्तक में चालीस चित्र हैं। सुन्दर टिकाऊ जिल्द कवर पर भव्य रंगीन माता नर्मदा का चित्र हैं। श्री महाराज जी ने २६ दिनों में यह यात्रा की थी। अतः ग्रन्थ में २६ ही अध्याय हैं। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगता है मानों हम ही परिक्रमा कर रहे हैं। सुन्दर सचित्र सजिल्द ४२८ पृष्ठ की पुस्तक न्यौछावर १५ रुपये मात्र है। पता—संकीर्तन भवन, पो० झूसी (जिला—इलाहाबाद)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीकृष्ण लीला-दर्शन

आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व श्रीवृन्दावन धाम में "श्रीकृष्ण लीला-दर्शन" पुस्तक दो खण्डों में लिखी गयी थी। प्रथम खण्ड तो गीताप्रेस से उसी समय बहुत सजधज के साथ छपा। एक अध्याय और उसी भाव का एक रङ्गीन चित्र। इस प्रकार ८०।८५ चित्रों सहित वह छपा। लोगों ने उसे अत्यन्त प्रेम से सराहा अपनाया। लगातार ४।५ संस्करण ५।५ या १०।१० सहस्त्र के छपे और बिके। दूसरा खण्ड छप ही न सका। उसकी हस्तलिखित प्रतियाँ मैंने यहाँ मँगा ली। जैसा गीताप्रेस से सचित्र छपा था वैसा तो हम छाप नहीं सके। वैसे चित्र मिलने दुर्लभ हो गये। हमने बिना चित्रों के ही प्रथम, द्वितीय खण्ड छाप दिये। तृतीय खण्ड में स्फुट लेख ही हैं। वे पहिले दूसरे खण्ड के अन्त में छपे थे। हमनें उन्हें इस तीसरे खण्ड में छापा है। प्रथम खण्ड में तो श्रीवृन्दावन तथा मथुरा की ६० लीलाओं का ६० अध्यायों में संक्षिप्त वर्णन है। द्वितीय खण्ड में मथुरा, द्वारका तथा हस्तिनापुर की ६९ लीलाओं का ६९ अध्यायों में संक्षिप्त वर्णन है। और इस तीसरे खण्ड में भगवान् की स्फुट लीलाओं का ४१ अध्यायों में वर्णन है। कुञ्ज, निकुञ्ज तथा निभृत निकुञ्जों की लीलाओं का हमने वर्णन नहीं किया है। न हम उनके वर्णन करने के अधिकारी हैं और न सर्वसाधारण के लिये इन्हें उपयोगी ही समझते हैं, किन्तु उन होरी, चोरी, दान, छलय, छद्म, वन, ऋतुगमन, मिलन, विरह और मान सम्बन्धी लीलाओं का वाह्य-रीति से संक्षेप में परिचय कराया है। इससे पाठक इन लीलाओं का अनुमान लगा सकेंगे। मूल्य प्रति खण्ड २१ रुपया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भागवत महिमा नाटक

रसात्मक वाक्य का नाम काव्य है। जिसमें भावविभाव अनुभाव, संचारीभाव, स्थायीभाव से युक्त रस आ जाय वही काव्य है। भागवत महिमा नाटक में इन भावों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रदर्शित किया है। श्रीमद्‌भागवत भगवान् श्यामसुन्दर का स्वरूप ही हैं। उसका माहात्म्य भक्ति, ज्ञान, वैराग्य से भरा हुआ है। उसी माहात्म्य कथा को रंगमंच पर प्रदर्शित करने वाली नाटयमण्डली के लिये बहुत ही उपयोगी है। ९० पृष्ठ की रङ्गीन छपाई की पुस्तक का मूल्य ५ रुपया।

काया-कल्प

यह बात प्रसिद्ध है कि पहिला सुख निरोगी काया। यदि शरीर स्वस्थ है, तो आप सभी धार्मिक, पारमार्थिक्त कार्य कर सकते हैं। और यदि अस्वस्थ हैं तो कुछ भी नहीं कर सकते किन्तु तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं । क्योंकि अब श्री ब्रह्मचारी जी महाराज ने कायाकल्प नामक पुस्तक लिखी है यदि आपने उसे एक बार पढ़ लिया और जो उसमें बताई है उसके अनुसार कार्य किया तो निश्चय ही आप पूर्ण स्वस्थ हो जायँगे। मूल्य ३१ रुपया।

पता—संकीर्तन भवन, पो० झूसी (जिला—इलाहाबाद)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माधुर्य-ग्रन्थ-माला के २१ अनुपम ग्रन्थ

रचयिता—स्वामी श्री सनातनदेवजी

स्वामी सनातनदेवजी गीताप्रेस के सुप्रसिद्ध लेखक है। इस समय भगवत्-कृपा से उनको भगवत्-सम्बन्धी कविताओं की स्फूर्ति होने लगी है। स्वतः ही पदों की रचना हो जातीहै। इस समय तक आपके द्वारा प्रायः ३५ ग्रन्थों की रचना हो चुकी हैं। उनमें से निम्नलिखित २१ ग्रन्थ प्रकाशित होकर हमारे यहाँ से मिलते हैं। इन पदो में प्रगाढ़ भगवत्-भक्ति के भाव भरे हैं। पाठक इन्हें पढ़कर भाव-विभोर हो जायँगे। वे ग्रन्थ ये हैं—

१. माधुर्य-लहरी
२. माधुर्य-मन्जूषा
३. माधुर्य-निर्झर
४. माधुर्य-मन्दान्किनी
५. माधुर्य-मयंक
६. माधुर्य-मकरन्द
७. माधुर्य-तरंगिणी
८. माधुर्य-कौमुदी
९. माधुर्य-निकुञ्ज
१०. माधुर्य-सुरसरि
११. माधुर्य-लतिका
१२. माधुर्य-वाटिका
१३. माधुर्य-मञ्जरी
१४. माधुर्य-सौदामिनी
१५. माधुर्य-कल्लोलिनी
१६. माधुर्य-वर्षिणी
१७. माधुर्य-सरिता
१८. माधुर्य-सुधा
१९. माधुर्य-माला
२०. माधुर्य-चन्द्रिका
२१. माधुर्य-दीपिका

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
व्यवस्थापक—संकीर्तन भवन,झूसी, इलाहाबाद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१. अनन्त श्रीविभूषित सर्वतन्त्र स्वतंत्र श्रीस्वामी अखण्डानन्द जी सरस्वती महाराज जी शुभ-सम्मति शुभ कामना

श्री राधा माधव के प्रेम-माधुर्य-रस में मग्न स्वामी सनातन-देवजी महाराज की वाणी युगल-प्रेम की संगीत-धारा का उद्‌गम बन गई है। उसी प्रवाह में अब माधुर्य सुरसरि प्रकट हुई है। उनकी रसानुभूति की यह स्वाभाविकी अभिव्यक्ति है। युगल सरकार के रसिक प्रेमियों के लिये यह अपूर्व प्रेम व्यञ्जन है। वे इसका अवगाहन एवं रसास्वादन करके श्री राधा-माधव लीला के आनन्द में मग्न हो जायँ—यही मेरी कामना है।

अखण्डानन्द सरस्वती

२. स्वनामधन्य स्वर्गीय आचार्य श्रीहजारीप्रसादजी द्विवेदी— इन पदों में एक अद्‌भुत भक्तिभाव और समर्पण की भावना है, जिसे कोई समर्पित व्यक्ति ही अभिव्यक्त कर सकता था। श्रीराधा-माधव के प्रति आपकी जो अनन्य भक्ति है और उनके चरणों तक पहुँचने की जो व्याकुल लालसा है वह मेरे जैसों को भी बहुत आकृष्ट करती है। ....उसमें जो विह्वल समर्पण भाव और व्याकुलता है वह तो अभिभूत कर देने वाली है। आप मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

३. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह एम०ए०, डी० लिट्

(सेवा निवृत्त वरिष्ठ आचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष मगध विश्वविद्यालय)

"किन शब्दों में धन्यवाद दूँ मूक हो रही वाणी।
श्यामा-श्याम रूप हैं पाँचों कृतियाँ ये कल्याणी।"

पता—संकीर्तन भवन, पो० झूसी (प्रयाग)
जिला—इलाहाबाद-२२१ ५०६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक मँगाने के विशेष नियम–

१. डाक खाने में बी०पी० नियमानुसार ३ दिन के अन्दर छुड़ा लेना चाहिये अन्यथा बी०पी० वापस हो जायेगी। वापस आने से उसकी सारी क्षति ग्राहकों को देनी होगी।

२. पुस्तकों के आर्डर के साथ अग्रिम धनराशि भेजना अत्यावश्यक होगा। तथा पूरा मूल्य चुका देने से ग्राहकों को अन्यान्य लाभ हैं। मूल्य मिल जाने पर संख्या रजिस्ट्री द्वारा ग्राहकों के पास पुस्तकें भेज देगी।

३. बिल्टी को भली-भाँति देखकर तथा स्टेशन मास्टर से सम्पूर्ण जानकारी करके ही छुड़ावें।

४. प्रकाशकों के मूल्य परिवर्तन के अुनसार पुस्तकों के मूल्य जो घटे-बढ़े होते हैं वे ग्राहकों को बिना सूचना दिये हुये माल भेजते समय चार्ज किया जाते हैं। पुस्तकों का डाक खर्च एवं पार्सल खर्च ग्राहकों को देना होगा।

५. पुस्तकों के मूल्य की तथा नवीन प्रकाशित ग्रन्थों की जानकारी के लिये सूंचीपत्र मुफ्त मँगायें।

६. वी०पी० भेजने में यदि किसी प्रकार की भूल हो गई हो तो कृपया वी०पी० छुड़ा लेवें तथा बीजक संख्या-क्रामङ्क तथा दिनांक सूचित करे। भूल सुधार कर दी जायेगी।

७. रुपये, चेक, पोस्टल आर्डर तथा ड्राफ्ट, रजिस्ट्री से भेजें।

८. अग्रिम धनराशि के सहित ही बड़े तथा छोटे आर्डर स्वीकार क़िये जाते हैं। पुस्तकों का सूची पत्र मुफ्त मगायें।

९. वैधानिक कार्यों के लिये इलाहाबाद कोर्ट मान्य होगा।

पता–संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग) इलाहाबाद–२२१५०६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्यं शिवं सुन्दरम् के आदर्श से अनुप्राणित

भागवती कथा

अनन्त शान्ति तथा अखण्ड आनन्द देने वाली

भागवती कथा ११८ भागों में

लेखक

कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय में अपनी
लेखनी से अविरल भक्ति भागीरथी
प्रवाहित करने वाले
सन्त शिरोमणि

श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज

दैहिक, दैविक, मानसिक-चाहिँ होहि भवकी व्यथा।
सब रोगनिकी एक है, ओषधि 'भागवती कथा'॥

मुद्रक : साकेत मुद्रण केन्द्र, प्रयाग □ दूरभाष : 612159

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh